चेतना

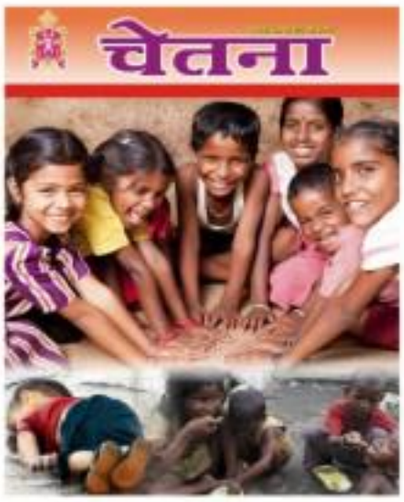

Patron :
Most Rev. Ignatius D'Souza

Editor :
Fr. Gregory Frank

Editorial Board :
Fr. Vivian Fernandes
Fr. Arun Saldanha
Sr. Esme Da Cunha, fdcc
Mrs. Sumita James
Mrs. Nirmala Mannas
Mrs. Anju Kurien
Mr. Philip R. Chatterjee
Mr. George Thomas

Publishing Head Quarters :
Bishop's House
63, Cantt., Bareilly - 243 001
Phone : 0581-2425598
email : chetnabareilly1989@gmail.com
website : www.bareillydiocese.org

Design & Printing :
Srishti
Ultimate Printing Solution
61, Civil Lines,
Near Islamia Girls Inter College
Bareilly - 243 003
Cell : 9411919783
pankajshukla944@gmail.com

विषय-सूची

क्र.सं.	विवरण	लेखक	पृष्ठ सं.
1.	सम्पादकीय– उडाऊ पिता की कहानी	– फा. ग्रेगरी फ्रैंक	2
2.	Blessed All Saints' Day!	– Bishop Ignatius D'Souza	3
3.	सब संतों का धन्य दिवस	– बिशप इग्नेशियस डिसूजा	4
4.	Bishop's Engagements	– Fr. Arun Saldanha	5
5.	Passing on	– Sr. Esme de Cunha, fdcc	6
6.	Immorals we are!	– Sr. Rekha Punia, UMI	8
7.	My Life is my journey with God	– Sr. Mamtha Paul, UMI	9
8.	Smart Cities – एक ख्वाहिश–	फा. मैरियन पिन्टो	10
9.	बाल दिवस	– ज्योत्सना खन्ना	12
10.	इंसानियत : आज की जरूरत	– फा. बैप्टिस्ट क्वाड्रस	13
11.	सिलसिला शिकायतों का.....	– फा. फ्रांसिस पिन्टो	15
12.	जिसका है दिल बड़ा समझो वह संत महान	– सि. सुमन, यू.एम.आई.	17
13.	बालक–जैसा बनो	– उपयाचक नवीन डिसूजा	18
14.	Having Devout faith	– Sr. Mercy Dass, UMI	19
15.	कृपा फाउन्डेशन नशा मुक्ति केन्द्र	–	20
16.	लिस्यू का संत परिवार	– फा. मैथ्यु कुम्पुक्कल, पंजाब	21
17.	Rehearsal of Death and Funeral	– Fr. Gregory Frank	24
18.	मध्यस्थ प्रार्थना	– गिरु	25
19.	सशक्त और जीवन वचन	– फा. अरुण सल्दाना, बरेली	27
20.	बेटी एक जीवनदायनी	– दिव्या बेनेडिक्ट, रामनगर	28
21.	बेटी का आत्म सम्मान	– रिबाका गिल, ज्योलीकोट	29
22.	समाचार दर्शन	–	31
23.	बाइबिल प्रश्नोत्तरी – 16	–	35
24.	मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) – 17		36

सम्पादकीय

उड़ाऊ पिता की कहानी

विनोद अपनी पढ़ाई अच्छी तरह से करता था। उसके माता पिता उसे बहुत चाहते थे और उससे बहुत प्यार करते थे। किन्तु जब वह नौवीं कक्षा में पहुँचा तो उसका आचरण बदलने लगा। अपने मोहल्ले के बुरे लड़कों के साथ मिलकर उसने बुरी आदतें सीखीं, कक्षाओं से अनुपस्थित रहने लगा। तीन बार वह घर से भाग गया, किन्तु भूख और छत की जरूरत उसे वापस खींच लाई। वह सोचता था कि घर, माँ–बाप एक बंधन है और बाहरी दुनिया में सब कुछ आजाद है। एक बार उसके पिता उसे मुंबई के छत्रपति शिवाजी टर्मिनस रेलवे स्टेशन पर मिले। उसके पिता ने न उसे डाँटा या कुछ कहा। बस, उसे घर ले आये और पहले जैसे ही प्यार करते रहे।

एक दिन विनोद के पिता बाजार गये थे। विनोद की माँ ने उसे बताया ''जब भी तुम घर से भाग जाते थे, तुम्हारे पिताजी हर शाम को रेलवे स्टेशन जाकर तुम्हारे वापस आने का इंतजार करते थे और जब भी तुम वापस आते थे तो मुझ से कहते थे–''हमारा बेटा वापस आ गया है, उसके लिये कुछ स्पेशल बना देना। पता नहीं पिछले दो–तीन दिनों से कुछ खाया भी है या नहीं। आज मैं मछली लाया हूँ। फ्राई कर देना। मछली फ्राई उसे बहुत पसंद है।'' विनोद की माँ ने यह सब उसे बताया जब कि वह खुद अपने पति को डाँटती थी कि वे बेटे की आदत खराब कर रहे हैं। एक रात यह सोचकर कि विनोद गहरी नींद में है, उसके पिता बाइबिल लेकर उसके कमरे में गये। उन्होंने बाइबिल से कुछ अंश पड़े और बाइबिल हाथ में लेकर विनोद को आशिष दी। विनोद आँखें मूंदने का नाटक करते सब देख रहा था। वह दिन उसके जीवन का महत्वपूर्ण दिन बना। उसने फिर कभी अपने माता–पिता को दुःख नहीं दिया।

बच्चे माता–पिता के लिये ईश्वर की देन हैं। बच्चे शरारती हैं, नटखट हैं। कभी–कभी माता–पिता की बातें नहीं मानते हैं। किन्तु प्यार, प्रार्थना हर दिल जीत सकता है। बस माता–पिता को सहन शक्ति चाहिये। माता–पिता बच्चों के लिये ईश्वर का वरदान है, उपहार हैं। हम हमारे माता–पिता को सुख दे सकें या नहीं किन्तु उन्हें दर्द न दें। कोई माता पिता यह नहीं कह पाये कि यह बच्चा हमारे घर में क्यों पैदा हुआ। हर माता पिता यह कहते हुए ईश्वर को धन्यवाद दें कि ऐसे बच्चे देने के लिये–हे पिता हम तेरी स्तुति करते है।

Happy Children's Day

फा. ग्रेगरी फ्रैंक

Blessed All Saints' Day!

Everyone loves browsing through the family photo album. **"Ah, what memories!"** we say as we take in the faces and the antics of the past. Grandmas and grandpas; aunts and uncles; children and pets; holidays and other festive times; even just good old ordinary, day-to-day happenings around the house. But why look at the photo album? We like the trip down memory lane. Why keep and look at the photo album? Because it gives us an anchor to our past.**It reminds us who we are.** It gives us a foundation for carrying on the family line and living the family life.

This is also why we celebrate **All Saints' Day on 1st November**. On All Saints' Day the Church stops to look at her own photo album. How comforting to look at past saints and see how God dealt with them in His mercy and forgiveness. How comforting to have the family history of God's people. It reminds us who we are as God's people. It reminds us that we are not alone on this journey of faith. It reminds us that we are not home just yet. We are merely passing through this world.

So, *what makes a saint?* When we look at God's saints, we can see it. When we listen to our Lord Jesus today, we can hear it. *What makes a saint?* The answer is simple: **God's blessing being in the right place with God, living in communion with the true "Holy One," our Lord Jesus Christ.** We poor, sinful human beings cannot make ourselves saints. In the "Beatitudes", one of the most loved portions of the Gospel (Mt. 5:1-12), Jesus tells us how saints are made. First, Jesus fills us with His mercy and life, with the riches of His dying and rising, with His forgiveness. Then He teaches you how you live as saints in the world.

The merciful show mercy because Jesus first showed His mercy to them. We love because He first loved us and sacrificed Himself for us. **The pure in heart watch and ponder** what God says. Their ideas get replaced by God's pure Truth. Their impure, man-made priorities and solutions get replaced by God's pure Gospel priorities and solutions. **The peacemakers** are those who bring other people to God's peace. **And the persecuted,**they are scorned, despised, gossiped about, attacked, and all out condemned because they want Jesus to be the center of attention.God's kingdom is made up of these people.

As we ponder our fellow saints, it's very comforting to know that they were just like us and we are just like them: **poor in spirit, mourners, gentle, and hungering and thirsting to be right with God.** The Lord Jesus died and rose for them; He also died and rose for us. In a world of fast-paced change, it's good to know that some things never change. God blesses us in Jesus in the very same way He has blessed all His saints through the centuries. God even uses His saints of yesteryear to inspire us to trust in Him and to love one another. *What makes a saint?***Jesus, His bloody death and His glorious resurrection.**Jesus is the merciful One, the pure-in-heart One, the one true Peacemaker, and the One who endured persecution to make us right with God. That's what makes us saints. Blessed All Saints' Day!

† Ignatius D' Souza
Bishop of Bareilly

सब संतों का धन्य दिवस

हर कोई परिवार का फोटो आलबम के पन्ने उलटकर देखना चाहता है। ''ओह, कितनी मीठी यादें हैं।'' अतीत के चेहरे और हरकतें देखकर हम मुस्कुराते हैं। दादा–दादी, चाचा–चाची, मौसा–मौसी, बच्चे और पालतू जानवर, छुट्टियाँ और मौज–मस्ती, कभी–कभी पुरानी दिनचर्या की बातें, रोजमर्रा की घटनायें जो परिवार में या घर के आसपास धरती हैं। किन्तु हम फोटों आल्बम क्यों देखते हैं? हम यादों की बारात में फिर लौटना चाहते हैं। हम फोटो आलबम इसलिये रखना और देखना चाहते हैं क्योंकि वह हमें हमारी अतीत के लिये एक लंगरगाह प्रदान करता है। वह हमें याद दिलाता है कि हम कौन हैं। वह हमें हमारी वंशावली का स्मरण दिलाता है और पारिवारिक जीवन जीने के लिये एक बुनियाद प्रदान करता है।

यही कारण है कि हम 1 नवंबर को सब संतों का पर्व मनाते हैं। इस पर्व के दिन कलीसिया भी अपनी फोटो आलबम देखने के लिये ठहर जाती है। अतीत के संतों को देखना और अपनी दया और क्षमाशीलता द्वारा ईश्वर ने उनसे कैसा व्यवहार किया–यह देखना कितना सुखद और सांत्वनाभरा होता है। ईश्वर की प्रजा का पारिवारिक इतिहास होना कितना दिलासा देता है। यह हमें याद दिलाता है कि हमारी विश्वास की यात्रा में हम अकेले नहीं हैं। यह हमें स्मरण दिलाता है कि हम हमारी मंजिल तक, अंतिम पड़ाव तक अभी नहीं पहुँचते हैं। हम अभी इस संसार की यात्रा से गुजर ही रहे हैं। एक संत कैसे बनता है? जब हम ईश्वर के संतों की ओर देखते हैं, तब हम समझ सकते हैं। जब हम आज येसु की वाणी सुनेंगे तब हम जान जायेंगे। संत कैसे बनते हैं ? उत्तर अति सरल है : ईश्वर के साथ सही स्थान पर होने से, हमारे प्रभु येसु ख्रीस्त जो पवित्र हैं उनके साथ सहभागिता का जीवन जीने से। हम दुर्बल, पापी मनुष्य अपने आप को संत नहीं बना सकते हैं। सुसमाचार के सब से प्रिय अंश 'आशीर्वचन' (मत्ती 5:1–12) में येसु हमें सिखाते हैं कि संत कैसे बनते हैं। सर्वप्रथम येसु हमें उसकी दया और जीवन से भर देते हैं, उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान की समृद्धि से भर देते हैं और उसकी क्षमाशीलता से सम्पन्न करते हैं। तब वे हमें सिखाते हैं कि इस संसार में हम कैसे संत बनकर जी सकते हैं।

जो दयालु हैं वे दया दिखाते हैं क्योंकि येसु ने उनके प्रति दया दिखाई है। हम प्रेम करते हैं क्योंकि पहले येसु ने हमें प्रेम किया और हमारे लिये अपने को बलिदान किया। जिनका हृदय निर्मल है वे विचार करते हैं और देखते हैं कि ईश्वर ने उनके लिये क्या–क्या किया है। उनके विचार ईश्वर के पवित्र सत्य से बदल जाते हैं। उनके अपवित्र, मानव–निर्मित प्राथमिकतायें और समाधान ईश्वर के और सुसमाचार के पवित्र प्राथमिकताओं और समाधानों में परिवर्तित होते हैं। मेल मिलाप करने वाले वे लोग हैं जो दूसरों को ईश्वरीय शांति में लाते हैं। अत्याचार सहने वालों का उपहास किया जाता है, उनका द्वेष किया जाता है, तुच्छ समझा जाता है, उनके बारे में गपशप किया जाता है, उन पर हमला किया जाता है, उन्हें अपराधी ठहराया जाता है क्योंकि वे चाहते हैं कि येसु उनके जीवन का केन्द्र बनें। ईश्वर का राज्य ऐसे ही लोगों द्वारा निर्मित किया जाता है।

जब हम हमारे सह–संतों पर चिंतन करते हैं तो सांत्वना का विषय यह है कि वे हमारे समान थे और हम भी उन्हीं के समान हैं : दीन–हीन, दरिद्र, शोक करने वाले, दयालु, धार्मिकता के प्यासे और भूखे। येसु उनके लिये मरे और जी उठे; वह हमारे लिये भी मरे और जी उठे। शीघ्र परिवर्तनशील संसार में यह जानना अच्छा है कि कुछ चीज़े कभी नहीं बदलती हैं। येसु के द्वारा ईश्वर हमें आशिषों से भर देता है जैसा कि सदियों से उसने अपने संतों को आशिषों से भरा था। ईश्वर अपने संतों का प्रयोग करता है ताकि हम उस पर भरोसा रखें और एक दूसरे से प्रेम करें। एक संत कैसे बनता है? संत येसु के द्वारा, उसकी दर्दनाक मृत्यु और महिमामय पुनरुत्थान द्वारा। येसु दयामयी है, हृदय से निर्मल हैं, वास्तविक मेल मिलाप कराने वाले हैं, जिन्होंने हमें ईश्वर के साथ धार्मिक बनाने के लिये अत्याचार सहे। यही हमें संत बनाता है। सभी संतों का पर्व धन्य हो।

† **इग्नेशियस डिसूजा**
धर्माध्यक्ष

CATHOLIC DIOCESE OF BAREILLY

Bishop's Engagements

November 2015

Date	Day	Time		Programme
1st	**Sun**	9:00	a.m.	Bible Festival, Bareilly Deanery
		5:00	p.m.	Visits FMA Sisters, Bareilly
2nd	Mon		a.m.	Office
		4:00	p.m.	Prayer Service at Cemetery, Bareilly
3rd	Tue	10:00	a.m.	Meets Commission for Catechesis, Bishop's House, Bareilly
			p.m.	Office
4th	Wed		a.m.	Leaves for Nausar
		5:00	p.m.	Blessing of Renovated Nirmala Convent, Nausar
5th	Thu	6:00	a.m.	Holy Eucharist: Nirmala Convent, Nausar
		9:00	a.m.	Visits Amariya Mission
6th	Fri			Office
7th	Sat	8:00	a.m.	Leave for Delhi
8th	**Sun**	6:00	a.m.	Holy Eucharist: Xth Plenary Assembly of the Institute of CFMSS, Kalu Sari, Delhi
		5:00	p.m.	Attends Sacerdotal Golden Jubilee Celebrations, St. Joseph's Cathedral, Lucknow
9th	Mon	4:00	a.m.	Leaves for Agra
10th - 11th	Tue-Wed			Attends TOT Program on Marriage Preparation Course, Diocesan Pastoral Centre, Agra
12th	Thu		a.m.	Returns to Bareilly
13th	Fri			Office
14th	Sat		a.m.	Office
		3:30	p.m.	Laying of Foundation Stone of St. Xavier's School, Khatima
15th	**Sun**	10:00	a.m.	Participates in the Annual Convention at Sitarganj Ashram
			p.m.	Returns to Bareilly
16th	Mon	11:55	a.m.	Leaves for Allahabad
17th	Tue	9:00	a.m.	Governing Body Meeting at St. Joseph's Regional Seminary, Allahabad
		6:00	p.m.	Leaves for Varanasi
18th	Wed	9:00	a.m.	Regional Bishops' Council, CRI and Priests' Council Meeting at Nav Sadhana, Varanasi
19th - 20th	Thu-Fri			Nav Sadhana, Varanasi
21st	Sat		p.m.	Returns to Bareilly
22nd	**Sun**	9:00	a.m.	Feast of Christ the King: Celebrates Holy Eucharist at Maria Goretti, Bareilly
23rd	Mon		a.m.	Office
		5:00	p.m.	Annual Programme of St. Francis School, Bareilly
24th	Tue		a.m.	Office
		2:00	p.m.	Annual Programme of St. Thomas School, Nawabganj
25th	Wed	9:00	a.m.	Recollection: Clergy of Allahabad Diocese, Allahabad
26th	Thu		a.m.	Returns to Bareilly
		5:00	p.m.	Annual Programme of Bishop Conrad School, Bareilly
27th	Fri	10:30	a.m.	Holy Eucharist: St. Joseph's Convent, Peerumadara
		2:00	p.m.	Annual Programme of St. Joseph's Convent School, Peerumadara
28th	Sat			Office
29th	**Sun**	7:00	a.m.	Holy Eucharist and Spiritual Animation to Provincial Synaxies FCC, Bareilly
		3:00	p.m.	Leaves for Pipriya
30th	Mon	10:30	a.m.	Pastoral Visit: St. Andrew's Church, Pipriya

Fr. Arun Saldanha Secretary

Passing on

November is the month traditionally dedicated to the memory of the dead. 1st November, All Saints' Day happens to be my birthday. It always fell during the Diwali Holidays in Mumbai. So I do not remember ever going to school on that day. I used to be a bit annoyed when at 12 noon on that day my mother would gather us all together and make us recite all the 15 decades of the Rosary for the Dead. The indulgences were said to be applicable to the Holy Souls from 12 noon on the 1 Nov. and the whole of 2nd Nov. One precious hour of my birthday wasted – or so I mused, when I was a child.

It is interesting to hear how we usually speak of death. When I was around 4 years old, I found my mother crying one day. To see our parents (grown-ups) cry was a rarest of the rare phenomenon. The lady next door sat by her. She told me that my mother had 'lost' her brother. When the lady moved away, I whispered to my Mum, "Don't cry Mummy, they will 'find' him."

Worse still when someone says: 'He is no more!' Gosh! So, what happened to him? Just dissolved into thin air? Another way of putting it: "He has passed away!" Where exactly is that 'away'?

I like better what we sometimes hear nowadays: 'He has **passed on**!' Somewhat like a graduation. One phase of life is over so that another may begin.

Most people have a great fear of death. Perhaps it is a consequence of our instinctual sense of self-preservation, our survival instinct, our clinging to life. Death seems to be a 'losing' of life and all that is familiar to us. It is a fear of the unknown. No one has returned to tell us what they have found on the other side … if there is an 'other' side! The fear of the unknown!

Then there is the fear of the possible suffering entailed, the dread of being alone and helpless, the fear of separation from loved ones … someone even worded it poetically as the terror of being left alone in the grave when everyone will leave, after the funeral!

It is good for us to think of death sometimes. Oh, yes, we do! But it is usually about someone else dying. We seldom think of our own 'passing on' as a certainty. We may consider "If I die…", as if we have a choice! But we hardly ever think of "When I die…", as a certainty.

I think that God is really a doting Father, in that He keeps the time and circumstances of our death a "top secret" so that we may live in full throttle till the very last moment. If we knew for certain the day and place of our death in advance, we would probably live in such dread, that all the time still left to us would be robbed of its vitality and joy. We would live like a Lazarus, all dressed up for his funeral, not coming out of his tomb, but frozen and dreading the moment when he would be asked to march in.

I look at death this way: I believe that God is our loving and doting father. As an earthly father waits to take a photograph of his child when the child is at its charming best… so God takes us when we are at our best. He is not a policeman, just waiting to catch us when we are wrong. He gives us time to right that wrong! He is not here to 'condemn' us, but has taken all the trouble to 'save' us.

Death is our second 'birth'. A child in the womb is happy and care-free, swimming to its heart's content. But then, as it grows, the space within becomes stifling. The child becomes uncomfortable, too big for that restricted area. The natural birth process begins and the babe comes out to a wider world full of new possibilities. Our earthly existence, satisfying though it might seem, is not without its worries and pain. When we reach

the threshold of pain, when we can take it no longer or are just enfeebled by the weight of years, God comes in as the charming liberator, luring us to a fuller eternal existence. To be home with Him, never to be ever separated again! What glory! What unsurpassable joy!

The pages of the New Testament are filled with this hope, this light, this glowing warmth. Some say that religion – all religions – are a promise of a 'pie in the sky'. And they ask: What if, after striving to fulfill every dictate of religion, after years of 'faithful' adherence, at death we find that it was all a hoax, just a yawning void, and that there really isn't anything beyond? Would life not have been just a pitiable waste of an opportunity to enjoy oneself, to have a good time … to hell with the rest? … Well, in that case there would not be a hell either! Nor a heaven!

Even if .. yes, if … there was nothing beyond … I think it would still be a reward in itself to live by one's conscience, to strive for the pure, the good, the beautiful! The aura of goodness is an exhilarating experience … a divine bliss. It raises us over the mundane and makes us sensitive to to the ethereal, to the magical world of a creation saturated with the presence of its Maker.

So Jesus says: *Be prepared, like the wise virgins, for you do not know the day nor the hour.*

Our Foundress, St Magdalene of Canossa, used to exhort her Sisters: "Give things the weight you would give them one hour after your death." A great tool to regain our equilibrium when we tend to drown in a cup-full of trouble. On another occasion she said: "If you live detached from everything and everybody, natural death will cost you nothing."

So, we could sing out with St Paul: *O Death where is your victory? O Death, where is your sting?*

I end with a poem I once came across.

The Dash

I read of a man who stood to speak at the funeral of a friend.
He referred to the dates on the tombstone, from the beginning…to the end.
He noted that first came the date of birth, …
and spoke the following date with tears,
but he said what mattered most of all was the 'dash' between those years.

For that dash represents all the time that they spent alive on earth.
And now only those who loved them know what that little line is worth.
For it matters not, how much we own, the cars…the house…the cash.
What matters is how we live and love, and how we spend our 'dash'.

so, think about this long and hard. Are there things you'd like to change?
For you never know how much time is left that can still be rearranged.
If we could just slow down enough to consider what's true and real
and always try to understand the way other people feel.

And be less quick to anger, and show appreciation more
and love the people in our lives like we've never loved before.

If we treat each other with respect and more often wear a smile,
remembering that this special 'dash' might only last a little while.
So, when your eulogy is being read, with your life's actions to rehash…
would you be proud of the things they say about how you spent YOUR 'dash'?

Sr Esme da Cunha *fdcc*

Don't let your worries get the best of you; remember, Moses started out as a basket case.

Immortals we are!

The other day a friend called up and remarked, "This month your article in 'Chetna' was bit boring in the second half." Immediately my mind went into automated mode and began to react inside me. Somehow I rushed through the conversation and felt great relief when the call got disconnected due to network error!

That evening I sat in prayer with this issue in order to understand what made me react this way…In all humility, I learnt that I needed to grow in **'Detachment'**…***detachment- not from people or situations; but from my own so-called image of myself that I think to be 'ME'***…***'ME'***a religious, ***'ME'*** a writer, ***'ME'*** a teacher, ***'ME'***a good preacher etc. etc…

These are the various roles that I play…but I am not these ***'roles'***;I am the ***'actor'*** who plays these roles. And if an actor begins to identify herself with every role she plays, how will her life become! I asked the Lord, "If I am not these 'roles', then ***WHO AM I?"*** and I waited in silence for Him to respond. All I could see and feel with closed eyes was 'infinite waves of the ocean'! In that sacred moment I knew my real 'SELF' and ***tasted the immortality*** of this self. The words of the scripture resounded in me, "Death, where is your victory? Death, where is your sting?" (1 Corinthians 15:55)

It was a profound experience of being an inseparable part of the cosmic energy…the energy that runs this body, this mind, and so on. In spiritual language we name it being, consciousness, light, spirit, power, soul, etc. Any word would do – what is important is the realization that I am the 'being', using this body and playing so many roles and responsibilities. The person I am talking to is another 'being'…extension of the same energy that runs in me and through me. This is to experience the ***'oneness'*** that every religion speaks about…realizing that the 'I' in me is also the 'I' in the other. We are all one… there are no separations. All separations are illusions.

'I' the wave, when busy looking outside, watching other waves…see myself separate and comparing. But while looking inside…I realize that there is no wave, but only water. And that's the reality of all other waves too. Our 'bodies', 'minds', 'feelings', 'attitudes', 'actions', 'reactions' are all waves that come and go. Detachment from the illusory self doesn't mean-to kill the waves; but ***to know*** that the waves,though visible, are not reality; the truth is only 'water'. Illusion was created when the water came to believe that it was a wave!

The root cause of all suffering in the world is because we have forgotten who we truly are! We have identified ourselves too much with our mortal identities and are under the illusion that this is all what we are! If we live our life with the consciousness of this truth that each one of us is part of the cosmic energy…playing various roles, will it not change our way of being and living?

The navigators are trained to find the **'eye of the storm'**where they can stop for safety in the midst of a storm. And in the storms of life, for us to find our safe refuge and stability is to be rooted in the immortality of our very being.

As we pray for our dear departed this month, let us make an effort to taste our 'immortal being' and know the deathless in us! And then 'detachment' from all that is not real, will not be an 'attempt' on our part; but a 'natural gift' of this consciousness.

"Death is the most misunderstood phenomenon. People have thought of death as the end of life. Yes, it is an end of something that is already dead. It is also a crescendo of what we call life, although very few know what life is. Those who have known death from inside lose all fear of death." (Osho)

Sr. Rekha Punia UMI, Bazpur

Smart Cities–एक ख्वाहिश.. एक दर्द...एक ख्वाब..

आये दिनों में गरमा–गरम खबर चल रही है–बुलेट ट्रेन और Smart Cities। जिस देश में 50 किमी. प्रतिघंटा चलने के लिए ट्रेनों के लिए मजबूत, सुयोग्य पटरी नहीं है, धीमी गति की ट्रेनों को समय–सारणी के अनुरूप चलाने की व्यवस्था नहीं है, समय–समय पर होने वाली दुर्घटना रोकने के लिए रोक–थाम की व्यवस्था नहीं है, दुर्घटनोपरांत सेवा शुश्रूषा हेतु कार्य–प्रणाली नहीं है, जिस रेलवे स्टेशन में हमें ''ट्रेन नं..... अनिश्चित काल के लिए देरी से चल रही है'' सुनने की आदत हुई है, उस स्टेशन में बुलेट ट्रेन को दौड़ते हुए देखना एक सपने से कम नहीं है..... शायद.....। पर मैं निराशावादी (pessimislic) नहीं हूँ! परन्तु मैं इमारत बनाने से पहले नींव ज़रूर देखना चाहता हूँ। आशावादी हूँ।।

जब मैंने वर्तमान सरकार की घोषण सुनी कि भारत वर्ष में सौ (100) Smart Cities बनेंगी तो मैंने शब्द कोष निकाल कर इसका अर्थ ढूँढा। ज्ञात हुआ Smart = Looking clean, neat, attractive, well dressed in fashionable or formal clothes. इसके तहत किसी को साफ सुथरा और बनावटी (Fashionable) रूप से अच्छा लगते ही सब कुछ सही नहीं आँका जा सकता है। Smart Cities के अंतर्गत (जो पूरे भारतवर्ष में मात्र 100 हैं) पीने के लिए साफ पानी मुहैया कराना, शहर को साफ सुथरा रखना, कूड़े–कचरे का निर्वहन करना, यातायात प्रबंधन, अच्छे शिक्षण संस्थान, निरंतर बिजली मुहैया कराना, स्वास्थ्य हेतु अस्पताल और इलाज की व्यवस्था करवाना e-governance के द्वारा नागरिकों को सरकारी कार्य–प्रणाली से जोड़ना, नागरिकों को सुरक्षा प्रदान करना .....आदि.....यह वाकई सराहनीय है।

परन्तु जो सवाल मुझे परेशान करने लगा है कि इसमें Smart है ही क्या? यह सारी हर इंसान की मूलभूत ज़रूरते हैं। यह सब हर एक नागरिक का हक है। इसमें किसी अधिकारी व नेता का ढ़िंढोरा पीटने की ज़रूरत ही क्या है ? यह उनकी प्राथमिक जिम्मेदारी (primary duty) है। यही सब करने के लिए व मुहैया कराने के लिए नागरिक उन्हें चुनकर विधायक या सांसद बनाकर सत्ता में भेजते हैं।

यह लोगों के प्रति नेताओं का किंचित एहसान नहीं है। आखिर यह सब किया भी तो इसमें fashionable क्या है। fashionable वह है जिसकी वास्तव में ज़रूरत नहीं वह सिर्फ एक addition है जैसे की कपड़ों के साथ आभूषण या cosmetics. Smart Cities के अंतर्गत प्राप्त कराये जाने वाली चीज़ें नागरिकों के लिए आभूषण व cosmetic नहीं हैं बल्कि वे रोटी, कपड़ा, मकान जितना ही स्थान रखती हैं।

एक और सवाल मुझे बेचैन करता है कि क्या यह सुविधायें सिर्फ भारत के सौ (100) शहरों के लोगों के लिए मात्र हैं ? अन्य शहरों, कस्बों, गाँवों में रहने वाले लोगों के लिए कौन इन सुविधाओं को मुहैया करायेगा? इसमें आप और मैं कहाँ हैं ? क्या हमें, स्वच्छ पानी, बिजली, इलाज, शिक्षा..... ज़रूरत नहीं है ? क्या ये हमारी मूल ज़रूरतें नहीं है ? हमें इन पर अधिकार नहीं है? क्या 100 शहरों के अलावा अन्य लोग भारतवर्ष का हिस्सा नहीं है? यह कैसा गौण रवैया है और दोहरी नीतियाँ ? वाकई Smart Cities एक दर्द ही सही।

किसी चिंतक ने कहा है "The child is the father of the man." अर्थात् संतान प्राप्त होने पर ही एक आदमी पिता बनने का हक प्राप्त करता है और औरत माँ बनने का। बच्चे के बिना औरत बाँझ कहलाती है और आदमी नपुंसक! माँ व बाप नहीं। इसीलिए अपनी खोक में पैदा हुए बच्चे के प्रति माँ–बाप का एहसान नहीं बल्कि बड़ी जिम्मेदारी है। बच्चा बालिग होने तक उसकी हर प्रकार से देखभाल करना उनका परम कर्त्तव्य है। वह कदापि fashionable or attractive से जोड़ा नहीं जा सकता। इसी भाँति शासक जनता द्वारा जनता के लिए चुने जाते हैं, ताकि शासक जनता की देखभाल करें जनता ना हो तो सरकार नहीं। जनता बिना सरकार, सांसद, विधायक मामूली आदमी और औरत मात्र हैं। तो सरकार को अपनी प्राथमिक जिम्मेदारी निभाने इतना अभिनय, नाटक, घोषणा.....

परिप्रेक्ष में Smart Cities का जन्म ही कैसे संभव है? यदि होगा, तो कितना टिकाऊ होगा? लाल बहादुर शास्त्री जी का कहना है ''यदि हम भ्रष्टाचार से गंभीरता और दृढ़ संकल्प के साथ नहीं निपटते तो हम अपने कर्त्तव्यों का निर्वाह करने में असफल होंगे।''

इसीलिए हमारी सरकार को चाहिए कि भ्रष्टाचार हर हाल में दूर करे। हर काम में पारदर्शिता लाये। नागरिकों को ज्यादा से ज्यादा सरकारी महकमें में शामिल करे। वोट बैंक के लिए काम करना बंद करे। सिद्धांतों की राजनीति अपनाये, नागरिकों को सूचना एवं सेवा का अधिकार जैसे हथियारों को देकर उनका जीवन सुगम बनायें तभी हमें हक से जीवन जीने का माहौल प्राप्त होगा। इसके अलावा हमें और कोई Smart व्यवस्था की अति आवश्यकता नहीं। बहरहाल हमें Smart India की ज़रूरत है, पर Smart 100 Cities की नहीं। कब मिलेगा हमें हमारे ख्वाबों का भारत? 1949 के जनवरी माह के 26 तारीख को हमारे देश का संविधान भातरवासियों के द्वारा अंगीकार किया गया। इसका पालन करना और कराना ही Smart India की नींव होगी। जयभारत।।

फा. मैरियन पिन्टो, धमोला

बाल-दिवस

प्रतिवर्ष 14 नवम्बर को हम बाल दिवस के रूप में मनाते हैं। बच्चे हमारी अमूल्य धरोहर हैं। हमारे भविष्य का आधार हैं, हमारे देश के कर्णधार हैं। ये वे सपने हैं जिन्हें हमें सजाना है, सहेजना है। ये ही हमारी संस्कृति की धारा को आगे भविष्य की ओर ले जाने वाले वाहक हैं। पं. जवाहर लाल नेहरू बच्चों को बहुत प्यार करते थे। बच्चों के साथ समय बिताना उन्हें अच्छा लगता था। बच्चे भी उन्हें प्यार से 'चाचा नहेरू' कहते थे। नेहरू जी अपनी व्यस्त दिनचर्या के बावजूद बच्चों के लिए समय निकाल लेते थे। इसलिए हम उनके जन्मदिन को बालदिवस के रूप में मनाते हैं। इस दिन विद्यालयों, संस्थाओं और विभिन्न स्थानों पर बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएँ एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। इस पर बाल कल्याण के अनेक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं जो हमें यह संदेश देते हैं कि बच्चे हमारे लिए कितने महत्वपूर्ण एवं बेशकीमती हैं। इन बच्चों के भविष्य को संवारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं परिवार एवं शिक्षक। गुरु को हम पारसमणि कह सकते हैं। जैसे पारमणि लोहे को स्पर्श कर उसे स्वर्ण में परिवर्तित कर देती है वैसे ही गुरु भी शिष्य के अज्ञान रूपी लोहे को अपने स्पर्श से ज्ञान रूपी स्वर्ण में बदल देता है। वह उसकी सफलताओं और योग्यताओं को पहचानकर उन्हें निखारने में उसकी मदद करता है। उसे मार्ग दिखाता है। परिवार जो बच्चे की प्रथम पाठशाला है जहाँ वह अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त कर अपनी जीवन यात्रा आरम्भ करता है। ये दोनों ही उसके जीवन के महत्वपूर्ण आधार हैं। लेकिन दुर्भाग्यवश कुछ बच्चे ऐसे भी होते हैं जो किसी कारणवश अपने परिवार के सुख से वंचित हो जाते हैं उन्हें अत्यन्त कठिन समय एवं परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। बालदिवस मनाने का उद्देश्य सही अर्थों में उस दिन पूरा होगा जब प्रत्येक बच्चे को शिक्षा का अधिकार मिलेगा व उन तक पहुँचेगा। क्योंकि शिक्षा ही वह साधन है जो उनके व्यक्तित्व और भविष्य को सुन्दर बनाएगी तथा उन्हें चमकता हुआ सितारा बनाएगी। यह हमारा कर्त्तव्य है कि हम प्रत्येक बच्चे को उसकी मूलभूत आवश्यकताओं को प्राप्त कराने में अपनी भागेदारी एवं नैतिक जिम्मेदारी निभाएं।

ज्योत्स्ना खन्ना (शिक्षिका),
मारिया गोरेत्ती विद्यालय, बरेली

इंसानियत : आज की ज़रूरत

हम मनुष्य हैं, ईश्वर ने हमें मनुष्य बनाया है, ईश्वर ने हमें स्वयं अपने ही रूप से बनाया है। ''ईश्वर ने मनुष्य को अपना प्रतिरूप बनाया; उसने उसे ईश्वर का प्रतिरूप बनाया; उसने नर और नारी के रूप में उनकी सृष्टि की'' (उत्पत्ति 1:27)। ''प्रभु ने धरती की मिट्टी से मनुष्य को गढ़ा और उसके नथुनों में प्राणवायु फूँक दी। इस प्रकार मनुष्य एक सजीव सत्व बन गया।'' (उत्पत्ति 2:7)। मनुष्य धरती की मिट्टी से बनाया गया है और इसलिए इस धरती का अंश है जो नश्वर है। मनुष्य के अन्दर ईश्वर का प्राणवायु है, ईश्वर का आत्म विद्यमान है जो अनश्वर है। धरती का अंश (मिट्टी) धरती में मिल जायेगी – ''तुम मिट्टी हो और मिट्टी में मिल जाओगे'' (उत्पत्ति 3:19)। आत्मा परमात्मा का अंश है। इसलिए 'हमारी आत्मा तब तक बेचैन है जब तक वह परमात्मा के साथ चैन न पाये' (सन्त अगस्टीन)। ईश्वर ने मनुष्य को इसलिए बनाया कि वह ईश्वर को जाने, उसे प्यार करे, उसकी सेवा करे और उसके साथ अनन्त जीवन में प्रवेश करें। ईश्वर ने अपने ही प्रतिरूप में सिर्फ मनुष्य बनाया; फरिश्ता नहीं, देवता नहीं, शैतान नहीं, कोई जानवर नहीं, सिर्फ मनुष्य बनाया है ताकि हम मनुष्य बनकर सारी सृष्टि को अपने अधीन करते हुए इस संसार में वास करें और हमारे मानवीय जीवन के द्वारा ईश्वर की महिमा हो।

मानव पतन

मनुष्य के पाप के कारण मनुष्य के अन्दर का ईश्वरीय जीवन (प्राणवायु) नष्ट हो गया, ईश्वर का प्रतिरूप कुरूप हो गया, सोने के चमकीले बर्तन में कोई जम गयी और वह ईश्वरीय चमक खत्म हो गयी है। शैतान (सांसारिकता) की चतुराई के सामने मनुष्य हार गया और कुछ बनने के लालच में अपनी वास्तविकता को खो बैठा और शैतान के राज्य का हिस्सा बन गया। शैतान ने साँप के रूप में स्त्री (हव्वा) के पास आकर कहा, ''नहीं! तुम नहीं मरोगी। ईश्वर जानता है कि यदि तुम उस वृक्ष का फल खाओगी, तो तुम्हारी आँखें खुल जायेंगी। तुम्हें भले–बुरे का ज्ञान हो जायेगा और इस प्रकार तुम ईश्वर के सदृश बन जाओगे'' (उत्पत्ति 3:4–5)। शैतान ने सरासर झूठ बोला और स्त्री ने झूठ को सच माना और ईश्वर के सदृश बनने के लिए ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हुए वर्जित फल तोड़कर खाया और पुरुष को भी दिया और इस प्रकार हर प्रकार के दुःख और पीड़ाओं को, यहाँ तक कि मृत्यु को गले लगाया और अमानत के रूप में अपनी पीढ़ी को दिया: ''क्योंकि पाप का वेतन मृत्यु है'' (रोमी 6:23)। आज भी मनुष्य कुछ बनने के लिए बेचैन है, दौड़ता फिर रहा है और पाप के ऊपर पाप कर रहा है। अपनी वास्तविकता को भूल रहा है, ईश्वर का प्रतिरूप नष्ट हो गया है और मनुष्य शैतान का और जानवर का रूप धारण किये जा रहा है। आज संसार भर में मनुष्य तो बहुत हैं परन्तु मानवीयता की अत्यन्त कमी है इसलिए यह पावन धरती नरक बनती जा रही है। आज इस संसार में मनुष्य की जरूरत है जो ईश्वर का प्रतिरूप है और जिसे ईश्वर ने बताया है।

ईश्वर का रूप

मनुष्य ईश्वर का प्रतिरूप है। ईश्वर का रूप क्या है ? ''प्रभु ने उसके सामने निकल कर कहा, ''प्रभु एक करुणामय तथा कृपालु ईश्वर है। वह देर से क्रोध करता और अनुकम्पा तथा सत्यप्रतिज्ञता का धनी है। वह हजार पीढ़ियों तक अपनी कृपा बनाये रखता है और बुराई, अपराध और पाप क्षमा करता है'' (निर्गमन 34:6–7)। करुणा, दया, कृपालुता, अनुकम्पा और सत्यप्रतिज्ञता – यह सब ईश्वर के गुण व रूप हैं और इसी रूप में ईश्वर ने हमें बनाया; यह सब ईश्वर के गुण व रूप हैं और इसी रूप में ईश्वर ने हमें बनाया; यह सब गुण हमारे अन्दर हैं। ''प्रभु न्यायपूर्वक शासन करता और सब पददलितों का पक्ष लेता है। वह दया और अनुकम्पा से परिपूर्ण हैं, वह सहनशील और प्रेममय है'' (स्त्रोत 103:6–12)। ईश्वर के बारे में बताते हुए सन्त योहन कहते हैं कि ईश्वर प्रेम है। (1 योहन 4:8)। प्रेम के बारे में बताते हुए सन्त पौलुस लिखते हैं; ''प्रेम सहनशील और दयालु है। प्रेम न तो ईर्ष्या करता है, न डींग मारता, न घमण्ड करता है। प्रेम अशोभनीय व्यवहार नहीं

करता। वह अपना स्वार्थ नहीं खोजता। प्रेम न तो झुँझलाता है और न बुराई का लेखा रखत है। वह दूसरों के पाप से नहीं, बल्कि उनके सदाचरण से प्रसन्न होता है। वह सब कुछ ढक देता है, सब कुछ पर विश्वास करता है, सब कुछ की आशा करता है और सब सह लेता है'' (1 कुरिन्थियों 13:4–7)। प्रभु येसु ने ईश्वर को एक प्रेमी पिता के रूप में देखा और क्रूस के मरण तक पिता के आज्ञाओं का पालन किया। हर एक मनुष्य इसी ईश्वर का प्रतिरूप है।

प्रभु येसु की मुक्ति

पाप के द्वारा मनुष्य ने अपनी मौलिकता खो दी है इसलिए सन्त पौलूस कहते हैं कि अन्याय करने वाले और पापमय जीवन जीने वाले स्वर्ग राज्य के अधिकारी नहीं होंगे'' (1 कुरिन्थियों 6:9–10। ''मनुष्य ने ईश्वर की आज्ञा भंग कर उनसे मैत्री खो दी, ईश्वर ने उसे मृत्यु के वश में नहीं छोड़ा बल्कि वह सबको सहारा बना कि खोजने वाले उसे पा सकें। ईश्वर ने संसार को इतना प्यार किया कि जब अवधि पूरी हुई, उन्होंने मानव मुक्ति के लिए अपने एकलौते पुत्र को भेजा जिन्होंने ईश्वर की मुक्ति योजना पूरी करने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए और पुनर्जीवित होकर, मृत्यु का विनाश तथा नवजीवन का निर्माण किया'' (यूखरिस्तीय प्रार्थना 4)। प्रभु येसु मनुष्य के अन्दर बसा हुआ ईश्वर के प्रतिरूप को नवीन बनाने के लिए, मनुष्य को फिर से ईश्वर की सन्तान और स्वर्ग राज्य के हकदार बनाने के लिए इस संसार में आये। प्रभु येसु ने अपना जीवन, शिक्षा, मृत्यु एवं पुनत्थान द्वारा मनुष्य को नई सृष्टि बनाया। ''जिस तरह एक ही मनुष्य के अपराध के फलस्वरूप सभी को दण्डाज्ञा मिली, उसी तरह एक ही मनुष्य के प्रायश्चित के फलस्वरूप सभी को पापमुक्ति और जीवन मिला'' (रोमी 5:18)।

प्रभु येसु सच ईश्वर और सच मनुष्य है। प्रभु येसु में ईश्वरीयता के और इंसानियत के गुण परिपूर्ण मात्रा में पाये जाते हैं। पवित्र आत्मा की शक्ति से, धन्य कुँवारी मरियम से जन्मे ईश्वर के पुत्र येसु, पाप को छोड़ सभी प्रकार से मानव जीवन जीए। उन्होंने अपने जीवन व शिक्षा के द्वारा सही मानव जीवन का प्रमाण दिया। प्रभु येसु ईश्वरीय प्रेम, दया और अनुकम्पा का सच्चा प्रतिबिम्ब है। प्रभु ने कहा, ''जिस प्रकार मैंने तुम लोगों को प्यार किया है, उसी प्रकार तुम भी एक दूसरे को प्यार करो। इससे बड़ा प्रेम किसी का नहीं कि कोई अपने मित्र के लिए अपने प्राण अर्पित कर दे'' (योहन 15:12–13)। येसु अपने समय के समाज के प्रतिष्ठित लोगों (शास्त्रियों और फरीसियों) की धार्मिकता का खण्डन करते हुए कहते हैं कि ''यदि तुम्हारी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से गहरी नहीं हुई, तो तुम स्वर्ग राज्य में प्रवेश नहीं करोगे'' (मत्ती 5:20)। शास्त्रियों और फरीसियों को धिक्कारते हुए प्रभु कहते हैं, ''साँपों! करैतों के बच्चों! तुम लोग नरक के दण्ड से कैसे बचोगे? (मत्ती 23:33)। ''ढोंगी शास्त्री और फरीसियों! तुम पुती हुई कब्र के सदृश हो, जो बाहर से तो सुन्दर दीख पड़ती है, किन्तु भीतर से हर तरह की गन्दगी से भरी हुई है'' (मत्ती 23:27)। उनमें मानवीय गुणो के अभाव के कारण प्रभु ऐसा कहते हैं।

मानवीय रूप

प्रभु येसु की शिक्षा हमें मानव जीवन की ओर ले जाती है। प्रभु कहते हैं, ''जो लोग मुझे 'प्रभु! प्रभु! कह कर पुकारते हैं, उनमें से सबके सब स्वर्ग राज्य में प्रवेश नहीं करेंगे। जो मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करता है, वही स्वर्ग राज्य में प्रवेश करेगा'' (मत्ती 7:21)। पिता की इच्छा यही है कि हम मनुष्य बनकर जीयें क्योंकि ईश्वर ने हमें मनुष्य बनाया है—शैतान या जानवर नहीं। मनुष्य वही है जो अपने को दीनहीन समझते हैं, जो नम्र हैं, जो दयालु हैं, जिनका हृदय निर्मल है, जो मेल कराते हैं, जो धार्मिकता के कारण अत्याचार सहते हैं, जो धार्मिकता के भूखे हैं। सच्चा मनुष्य वह है जो अपने शत्रुओं से प्रेम करे, जो दूसरों से अपने प्रति जैसा व्यवहार चाहता हो, उनके प्रति वैसा ही करे, जो संसार की ज्योति और पृथ्वी का नमक बनकर जीएं, स्वर्ग राज्य की ओर अपनी नजरें रखकर इस संसार के सफर को आगे बढ़ायें'' (मत्ती 5:6:7)। ईश्वर का प्रतिरूप बन कर जीएं। आज समाज में मानवीयता के गुणों से भरपूर मनुष्यों की जरूरत है जो ईश्वर के प्रतिरूप हैं। हम मनुष्य बनकर जीएं क्योंकि हम इस संसार में मनुष्य बने रह कर ही स्वर्गराज्य में प्रवेश कर सकते हैं, अन्यथा नहीं।

फा. बैप्टिस्ट क्वाड्रस, काठगोदाम

सिलसिला शिकायतों का.....!

कुछ दिन पहले मैं संध्या के समय एक परिवार में पारिवारिक भेंट के लिए गया हुआ था। जैसे ही मैं उनके यहाँ पहुँचा तो दूर से ही मुझे 'जय येसु की'। अभिवादन सुनाई दिया। मैंने भी घर में प्रवेश कर लोगों की जय येसु ही कहा। जब तक वे मुझे पानी पिलाते तब तक मैंने उनसे सवाल किया– क्या हाल चाल हैं भाई! उन्होंने तुरन्त उत्तर देते हुए कहा– हाल–चाल तो बहुत बुरे हैं। अच्छा हुआ आप आज हमारे घर आये। हम सोच ही रहे थे कि अगर आप आयेंगे तब आपसे खुलकर बातचीत करेंगे। मैंने कहा चलो फिर बताईये– घर का मुखिया कहने लगा कि हमारी कोई बात नहीं सुनता। बेटे को कुछ बात बताता हूँ तो नाराज हो जाता है और बेटी तो गुस्सा हो जाती है और वह छोटू तो अभी से नियंत्रण से बाहर है बच्चों की माँ को बोलता हूँ तो वह तो बच्चों का पक्ष लेती है और मैं अकेला विरोधी पक्ष का हो जाता हूँ। कुछ मिलाकर अगर मैं एक शब्द बोलता हूँ तो कम हो जाता है और दो शब्द बोल दूँ तो ज्यादा हो जाता है। करूँ तो क्या करूँ क्या? उतने में श्रीमती बोल पड़ती हैं कोई इनकी बात माने कैसे ? ढंग से कोई बात बोलनी आती है? बात–बात में ही गाली–गलौज कर देते हैं। बच्चों के सामने अच्छा उदाहरण देने के बजाय गलत भाषा का प्रयोग करते हुए बच्चों को बिगाड़ने में इनका पूरा हाथ है। मैं तो इनसे थक चुकी हूँ और तो और ये नशा करना नहीं छोड़ते। इनकी यही आदत बड़े बेटे ने अपना ली है। फादर जी आप ही बताइये– जवान बच्चों के सामने गाली–गलौज करना, नशा करना, गलत उदाहरण देना क्या इनका यही कर्त्तव्य बनता है? परिवार ठीक कैसे होगा जब परिवार का मुखिया ही ठीक न हो। उतने में बेटी बोल पड़ती है। हाँ फादर जी, हम बच्चे सोचते हैं कि हमारा घर भी दूसरों के घर की भाँति अच्छा और आदर्श हो, लेकिन जितना हम कोशिश करते हैं उतना काम खराब हो जाता है। हम बच्चे सोचते है कि शाम को एक साथ बैठकर प्रार्थना करें बाइबिल पढ़े, लेकिन क्या करें। मम्मी–पापा की लड़ाई खत्म नहीं होती वह उनका लड़ने का समय होता है। पापा पीकर आते हैं तो मम्मी गाली देने लगती और पापा बाद में शेर बन जाते हैं और हम सभी बच्चे चुप होकर बैठ जाते हैं। उतने में बड़ा लड़का काम से घर में प्रवेश करता है और बोलता है फादर जी सुन लिया आपने हमारे घर की कहानी। हमारे माता–पिता सोचते हैं कि सारी दुनियाँ गलत है। केवल सही ये दोनों हैं। सारी दुनिया भर के लोगों की कमी निकालना इनका पेशा है। सुबह दूध लेकर आने वाले, दुधिया से लेकर शाम को सब्जी लेकर आने वाले ठेले वाले तक की शिकायत है। हमारा घर तो नरक बना पड़ा है। क्या करें फादर जी आप ही समझाइये।

अब तब शिकायतों का सिलसिला सुनकर मेरे कान गरम हो चुके थे। हर घर की अपनी–अपनी कहानी है। शिकायतों की बारी आती है तो कोई किसी से कम नहीं होना चाहता क्योंकि हर कोई सोचता है कि केवल मैं ही सही हूँ। अन्य सभी गलत हैं। कभी निकालने की बारी आती है तो मनुष्यों को छोड़िये लोग खुदा–बाप को भी नहीं छोड़ते। यह सिलसिला तब से शुरू हुआ जब से ईश्वर ने मनुष्य की रचना की। आदम और हेवा ने जब फल खाया और पाप किया तो ईश्वर ने उनसे पूछा– उत्तर में आदम ने कहा– जिस स्त्री को आपने मेरे साथ रहने के लिए दिया है, उस स्त्री ने मुझे फल दिया और मैंने खा लिया यानि कि यहाँ पर गलती न ही आदम की और न ही हेवा की बल्कि पिता परमेश्वर की।

शिकायतों की वजह

हमारा व्यवहार : कोई भी व्यक्ति रास्ते में गुज़र रहे अनजान व्यक्ति से नाराज नहीं हो सकता और न ही गुस्सा व नाराज नहीं हो सकता और न ही गुस्सा कर सकता है। हम लोग गुस्सा व नाराज उसी से होते हैं जिसके साथ हमारा कहीं न कहीं किसी न किसी प्रकार से रिश्ता है। एक बार एक महिला अपने पति के बारे में मुझसे शिकायत कर रही थी। शिकायत में उन्होंने मुझसे कहा कि उसका पति रोज शराब पीकर आता है। गाली गलौज करता और उसे मारता है। मुझे समझ में नहीं आया कि मैं उस स्त्री से क्या कहूँ। क्योंकि वह बहुत रो रही थी। मैंने उसे हँसाने के

उद्देश्य से कहा–बहन आप ईश्वर को धन्यवाद दीजिए। वह तुरन्त बोल पड़ी किस बात के लिए मैं धन्यवाद दूँ। मैंने कहा– देखिए आपका पति शराब पीने के बाद भी, नशे के हालत में भी अपने ही घर पर वापस आता है न। मान लीजिए आपका पति नशे की हालत में आपके पड़ोसी के घर में घुस जाये और वहाँ पर गाली गलौज करते हुए मारपीट करने लग जाये तो कितना काम खराब हो जायेगा। इसलिए आप ईश्वर को धन्यवाद दीजिए और उनके मन परिवर्तन के लिए ईश्वर से प्रार्थना कीजिए अवश्य प्रभु आपकी प्रार्थना सुनेंगे। इतने में वह महिला हँस पड़ी। बहुत जोर–जोर से हँसने लगी और कहने लगी ठीक फादर जी मैं उनके लिए आज से प्रार्थना करुँगी और गुस्सा नहीं करुँगी बल्कि प्यार से उन्हें समझाऊँगी। उनके प्रति मैं अपना व्यवहार ही बदल दूँगी। ऐसा करने पर उस बहन की प्रार्थना प्रभु ने सुन लिया और उसके परिवार में आशिष आयी।

प्राथमिकता में गड़बड़झाला : हम सभी विकसित युग में जी रहे हैं। दिन प्रतिदिन सुविधाएँ बढ़ रही हैं। सुविधओं के साथ–साथ समस्याएँ भी बढ़ रही हैं। एक समय था जब लोगों के पास घड़ी नहीं हुआ करती थी। लेकिन उनके पास भरपूर समय हुआ करता था। लेकिन आज सबके पास घड़ी है लेकिन समय नहीं है। हर व्यक्ति बहुत व्यस्त है कुछ लोग सुविधाओं के वजह से मस्त हैं। कुछ साल पहले जब रेडियो, टी.बी., मोबाईल, इन्टरनेट आदि नहीं था तो लोगों के पास शाम के वक्त अपने परिवार के साथ एक साथ बैठने का समय था। एक साथ प्रार्थना के लिए समय था। एक साथ खाना खाते थे। एक साथ बैठकर बातचीत करते थे। आज इन सभी सुविधाओं के वजह से परिवारों में बाँटवारा हो चुका है। एक दूसरे के साथ बैठकर बातचीत करने का समय मोबाइल में बीत जाता है। प्रार्थना में खर्च करने वाला समय टी.बी. के सामने बीत जाता है। फेसबुक और व्हाट्सअप के द्वारा जितनी नज़दीकियाँ आई हैं उतनी ही दूरियाँ आयी हैं। पारिवारिक जीवन में। ऐसे परिवेश में हर कोई व्यक्ति को अपने प्राथमिकताओं पर ध्यान देने की जरूरत है। प्राथमिक जिम्मेदारियों पर प्राथमिकता देने पर बहुत सारी हमारी समस्याएँ दूर हो सकती हैं।

फा. फ्रांसिस पिन्टो, बरेली

LET US PRAY

NOVEMBER, 2015

BAREILLY DIOCESAN PRIESTS BIRTHDAYS

1	Fr. Dominic Selvaraj	05th November	Chorgallia
2	Fr. Christopher Shaji	10th November	Ranikhet
3	Fr. Maurice D'Sa	12th November	Puranpur
4	Fr. John Bosco Arackal	16th November	Bengaluru
5	Fr. Gregory Frank	17th November	Bareilly
6	Fr. Royal Anthony	25th November	Bareilly
	Fr. Deepesh Minj IMS	27th November	Faridpur
7	Fr. Rajesh Jayasheelan	30th November	Pithoragarh

CHURCH FEAST DAY

1	Christ the King Church	22th November	Chorgallia
2	St. Andrew's Church	30th November	Pipriya

जिसका का है दिल बड़ा समझो वह है संत महान

नवम्बर माह विशेष रूप से संतों को समर्पित महीना है। एक नवम्बर को हम सब संतो का त्यौहार मनाते हैं, उन्हें याद करते हैं, उनके जीवन को अपने सामने एक प्रेरणा के रुपमें देखते हैं कि किस तरह उनका जीवन रहा,और वे कैसे संत चुने गये। जीवन को कठिन परिस्थितियों में भी, उनका आस्था एवं विश्वास नहीं डगमगाया और उन्होनें प्रार्थना, नम्रता, विश्वास एवं धैर्य के साथ अपना जीवन बिताया। संत मोनिका, संत मरिया गोरेत्ती संत तेरेसा आदि ढेरो उदाहरण हमारे सामने हैं। हमारे मन में विचार आते हैं कि ये संत कौन हैं, हमें संतों की तरह बनने के लिए क्या करना चाहिए, हम किस तरह अपना जीवन बितायें एवं कार्य करें, ताकि उनकी तरह बन सके।

संत वे लोग हैं, जिन्होंने साधारण होते हुए भी एक असाधारण का जीवन बिताया एवं सुसमाचार के मूल्यों को अपने जीवन में धारण किया तथा उसके अनुसार अपना जीवन जीते हैं। संत वे लोग हैं जो सभी मुश्किलों एवं दुःखों को गले लगा कर, ईश्वर के पवित्र रूप को देख पाते हैं। सदियों से लेकर आज तक, जितने भी संत हुए हैं, आत्मा के शुद्धि के लिए स्वयं अपमान, दोश, ग्रहण किया तथा प्रार्थना, समझदारी, त्याग, दयालुता, सहनशीलता आदि द्वारा एक उदाहरण समाज एवं लोगों के सामने रखा जिसके द्वारा वे सच्चे मसीही, ख्रीस्त के सेवक बन पाये।

क्या संत बनना आसान हैं? नहीं, यह आसान नहीं है। संत बनना हर एक इंसान के हाथ में हैं। यदि इंसान चाहे तो संत भी बन सकता हैं और यदि चाहे तो हेवान (शैतान) भी बन सकता है। ईश्वर ने इंसान को, दो प्रकार की बुलाहट दी है। एक तो ईश्वरीय बुलाहट और दुसरी पारिवारिक बुलाहट; संत मोनिका एक सधारण महिला थी उन्होंने, प्रार्थना के द्वारा अपने बेटे को जो एक पापमय जीवन जी रहा था, उसका मन परिवर्तन हुआ और उन्होंने अपना सर्म्पूण जीवन प्रभु को समर्पित कर दिया और आज वे एक महान संत के रूप में हमारे सामने है। बालक येसु की संत तेरेसा, संत अल्फोंसा, संत मरिया गोरेती, संत फ्रांसिस असीसी एवं अन्य संतों ने वर्षो तक अनेकों कष्ट उठाये एवं एक त्यागमय जीवन बिताया। तब जाकर आज वे लोग एक महान उदाहरण बन कर हमारे सामने हैं। एक संत बनने के लिये सब कुछ का त्याग करना पड़ता है सभी प्रकार के प्रलोभनों से बचना पड़ता है। धर्म परायण होना पड़ता है। एक इंसान ये सब तभी कर सकता/सकती है जब उसे ईश्वर का अनुग्रह प्राप्त होता है। पवित्र बाइबिल में हम पढते है कि बुलाये तो बहुत गये हैं लेकिन कुछ ही लोग चुने गये हैं। ठीक उसी प्रकार बहुत से लोग धार्मिकता का जीवन जीते हैं लेकिन कुछ ही लोग संत बन पाते हैं।

जिस का है दिल बडा समझो वही है संत महान

दीन दुखियों को जिसने ईश्वर समझकर गले लगाया है वही संत महान

गर चाहतें हैं हम देखना ईश्वर को ऑखों से तो आओ देखें हम इंसान को इंसानियत से

हो स्वर्ग में हे सभी संतजनों मन से तुम हो नम्र

तुम्हें हमारे हृदय से शत शत नमन नमन नमन

सि. सुमन यू॰एम॰आई॰ काठगोदाम

मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) -16 के विजेता

प्रथम पुरस्कार : Renu Bernard, Jeolikote (20/20)

द्वितीय पुरस्कार : Sr. Divya FDCC, Ranikhet (15/20)

तृतीय पुरस्कार : Sr. Nidhi SRA, Chorgallia (14/20)

सांत्वना पुरस्कार **Consolation Prize:** Shatish Alexander, Motinagar (13/20)

बालक–जैसा बनो

बच्चें मन के सच्चे, स्वभाव से नम्र और विनीत होते हैं। वे अपने माता–पिता के आश्रय में बढ़ते है और उन पर निर्भर रहते है। वे रोते हैं, लड़ते हैं, लेकिन कुछ देर के बाद सब कुछ भूल कर पुनः खेलने लगते हैं। वे हृदय से निर्मल तथा निष्कलंक होते हैं। इसलिए प्रभु येसु हमें बालक–जैसा बनने तथा हर एक को अपने जीवन में बालक–जैसा स्वागत करने के लिए कहते हैं। प्रभु येसु कहते हैं, ''जो अपने को इस बालक जैसा छोटा समझता है, वह स्वर्ग के राज्य में बडा है, और मेरे नाम पर ऐसे बालक का स्वगत करता है, वह मेरा स्वगत करता है''(मत्ती. 18:4)।

वैसे तो, हम ब्रदर्स गुरूकुल में बच्चों के सम्पर्क से दूर रहते हैं। दो साल के बाद, जब मैं छुट्टियों में घर गया था, उस समय मेरा भतीजा डेढ़ साल का था। वह देखने में सुन्दर और कोमल था। उन दिनों में कुछ समय के लिए मैं उसे अपने से दूर ही रखा। एक दिन ऐसा हुआ कि घर में उसकी देख–रेख करने के लिए मेरे अलावा कोई नहीं था। उस दिन, मैं सच–मुच परेशान हो गया। मुझे अपना सब काम छोड़ कर उसके लिए एक बालक–जैसा बनना पड़ा, इतना ही नहीं उसे एक बालक जैसे स्वीकार भी करना पड़ा। तब जा कर मैं उसे समझ पाया तथ उसकी देख–रेख कर पाया। बालकों के लिए बालक–जैसा बनना या उन्हें बालक–जैसा स्वीकार करना आसान हैं। लेकिन हमें बड़ों के लिए बालक–जैसा बनना और बड़ो को बालक–जैसा स्वीकार करना आसान नहीं हैं। कभी–कभी यह नामुमकिन भी हो जाता है।

इन्सान का जीवन अच्छाई के साथ–साथ दुर्गुणों से भी संचालित होता है। स्वयं को बालक जैसे बनाने के लिए, हमें स्वार्थ, घमंड़, वासना जैसे अन्य आंतरिक दुर्गुणों से लड़ना पड़ता है। इसके बारें में सन्त याकूब कहते हैं, ''आप लोगों में द्वेष और लडाई–झगडा क्यों? क्या इसका कारण यह नहीं है कि आपकी वासनाएँ आपके अन्दर लड़ाई करती हैं? आप अपनी लालसा पूरी नहीं कर पाते और इसलिए हत्या करते हैं। आप जिस चीज़ के लिए ईर्ष्या करते हैं, उसे नहीं पाते और इसलिए लड़ते–झगड़ते हैं'' (याकूब 4:1–2)।

दूसरों को बालक–जैसा अपने जीवन में स्वीकार करने के लिए हमें दूसरों के स्वार्थ, वासना, घमंड़ जैसे दुर्गुणों का सामना करना पड़ता है। हमें अपने पडोसियों के तथा अपने शत्रुओं के कमियों को नज़र अन्दाज़ करते हुए उनसे प्यार करना चाहिए, जैसा की येसु ने स्वयं अपने जीवन में दूसरों को अपनाने के लिए उनके अनेक बुराईयों का सामना किये। प्रभु येसु ने कहा है, ''तुम लोगों ने सुना है कि कहा गया है–अपने पडोसी से प्रेम करो और अपने बैरी से बैर। परन्तु मैं तुम से कहता हूँ–अपने शत्रुओं से प्रेम करो और जो तुम पर अत्याचार करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करो''(मत्ती. 5:43–44)। प्रभु यह भी कहते हैं, ''अपने पडोसी को अपने समान प्यार करो''(लूकस 10:27)।

इन सब बातों को हम केवल प्रभु येसु से ही सीख सकते हैं क्योंकि येसु एक मात्र सच्चे बालक का प्रतिरूप हैं। प्रभु येसु कहते है, ''मुझसे सीखो मैं स्वभाव से नम्र और विनीत हूँ'' (मत्ती. 11: 29)। इसके लिए, हमें प्रभु का अनुसरण तथा उनके सद्गुणों को धारण करना पड़ेगा।

एक बार अमेरिका में महान कलाकार चार्लि चाप्लिन की नकल करने की प्रतियोगिता रखी गयी थी। उसमें चार्लि चाप्लिन भी भाग लेने गये थे। उस प्रतियोगिता में चार्लि चाप्लिन को इनाम नहीं मिला। प्रतियोगिता के बाद उनसे पूछा गया कि आप खुद महान कलाकार चार्लि चाप्लिन होते हुए भी क्यों आपको इस प्रतियोगिता में इनाम नहीं मिला? वे कुछ देर के लिए मौन हो गये और फिर उत्तर दिये, ''कुछ घडी़ के लिए, मैंने खुद को भूल कर, स्वयं की नकल की थी। इसी कारण प्रतियोगिता में असफल रहा।'' जब इनाम जीतने वाले से पूछा गया कि आप किस प्रकार इस प्रतियोगिता को जीते? तो उसने कहा, ''मैंने एक घडी़ के लिए स्वयं को भूल कर महान कलाकार चार्लि चाप्लिन को धारण कर लिया और खुद को महान कलाकार चार्लि चाप्लिन समझने लगा और प्रतियोगिता जीत गया।''

केवल प्रभु की नकल करने मात्र से हम बालक जैसे नहीं बन सकते हैं एंव हर एक को अपने जीवन में बालक–जैसा स्वीकार नहीं कर सकते हैं। अर्थात केवल पूजा पाठ में भाग लेने से, दान देने या किसी की भलाई करने से, हम प्रभु येसु जैसे नहीं बन सकते हैं। इस के लिए हमें प्रभु येसु के सभी सद्गुणों को धारण करना पड़ेगा। तब जा कर हम छोटे बालक–जैसा बनेंगे। जब हम छोटे बालक–जैसा बनेंगे तो हमरी प्रर्थना सुनी जायेगी और हम स्वर्ग राज्य के सदस्य बन जायेंगे।

उपयाजक नवीन डिसूजा, इलाहाबाद

Having devout faith

Life is a beautiful gift from God.

Man, since time immemorial, has tried to define life in one or the other way suiting to the emotion dominating that moment.

Whatever be the emotion, one thing is for sure that life is a gift from the merciful God.

Each moment being a new lease of life and each day as an accumulation of all such blessed moments.

Day after day, we, like travellers, happily traverse the journey of life. Journey that has been for us, as God's will always and will be by virtue of the same desire.

Now, since a journey being a dynamic process has to have a goal and a direction. Without a goal, it would become a purposeless activity and without the correctness of direction goal would remain a mere illusion.

As such, through spiritual life we try to reach up to the high realms of God, becoming 'HE' himself. It becomes easy if we act like a creeper. What is its strength and status on its own? It can't even stand up to any height and would remain fallen on the ground. But when it takes the support of a mighty tree, then? It clings on the tree and reaches as high at the top of the tree. YOU also cling to God and take HIS support directly. What is the height of God? Is there any limit? YOU can also rise (evolve) beyond every height, provided you remain 'clung' to Him (to divinity). What you will have to do for this? Take his support. Surrender yourself to Him, follow this discipline; adopt HIS (divine) values, Live as per HIS will, Move in the direction of HIS Light. Then you will always remain with HIM. Your 'self' will merge in HIM; You'll become one of Him.

Act like a kite and leave yourself in the hands of the player (God). Move under HIS control whether he loosens the thread or tightens it.

This is the Golden rule of becoming God's loved one, becoming Light.

Accept HIS Will whole heartedly at every step of life if you wish to fly high in the sky of serene dignity and unalloyed joy.

When times are hard, have Faith. It's simply to test your dedication, depth of devotion, nobility of character and (spiritual) merits.

That is why God asks the devotees to surrender before Him whatever they have.

Your every attempt of self refinement is like sowing a seed, planting a sapling in HIS farm.

You cannot gain His mercy if you aren't merciful to others. If you want your share, lend a helping hand.

Forget not! That your stay in this physical world in temporary.

He, who is born, has to die. But when God is the beginning and is the culmination, why fear?

Those who fear should remember that Deadth means nothing but the transformation of ugliness into divine beauty, just like embracing the new clothes, leaving behind the old without showing attachment.

Let us live life as per God's will because then only it is appreciable and dignified.

And face death with a broad smile just like the ones who have been our torch-bearers; thoughtful, brave and believers. Let us go back to the Holy Bible where in John 11: 25-26 Jesus says "I am the resurrection and life. He who believes in me even though he dies will live forever and everyone who lives and believes in me will never die."

Sr. Mercy Das,UMI, Kathgodam

It is easier to preach ten sermons than it is to live one.

कृपा फाउन्डेशन नशा मुक्ति केन्द्र बरेली
क्या शराब किसी बात का उत्तर है?

प्रिय मित्र, बुद्धिमानी का एक कथन–सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र हमें शराब की लत में पड़ने के विरुद्ध चेतावनी देता है। एक प्राचीन बुद्धिमानी की सलाह इस प्रकार है।

शराब, शराबी को उपहास का पात्र बनाती है। उससे हल्ला–गुल्ला करवाती है। शराबियों के साथ मत रहें। (नीति वचन 20:1, 23:20)

शराब और तन्दुरुस्ती : चिकित्सा–शास्त्र हमें बताता है कि मदिरा हमारी तन्दरूस्ती के लिए कितनी नुकसानदायक है। हमसे हमारे सामने तन्दुरुस्ती की सबसे मुख्य समस्या होती है। हमारे लिवर कलेजे को नुकसान पहुँचाता है। शुरू में इसके कारण पेट में दर्द होना, थकान रहना, टखनों में सूजन आ जाना और हथेलियों पर लालिमा छा जाने की शिकायत रहती है, डॉक्टर इसे कलेजे में सूजन आना–सूत्रणरोग सिरोसिस ऑफ दी लिवर कहते हैं।

शराब की लत और पियक्कड़पन : अध्ययन के द्वारा इस बात की पुष्टि हुई है कि एक शराबी के जीवन में तीन विशिष्ट अवस्थाएँ होती हैं।

1. प्रारम्भिक अवस्था : शराब पीने का आदी हो जाना एक लगातार बढ़ती हुई बीमारी है।

2. मध्यम अवस्था : इस अवस्था में आत्म नियन्त्रण का अभाव हो जाता है।

3. घातक अवस्था : इस स्थिति में आने तक शारीरिक, मानसिक और सामाजिक व्यवहार में एक स्पष्ट गिरावट आ चुकी होती है।

शराब छोड़ना : शुभ समाचार यह है– यदि आप मदद लेंगे तो शराब छोड़ने के आपको अवसर बहुत बढ़ जाएंगे जब तक आत्म–प्रेरित नहीं होते तब तक शराब छोड़ना अकसर कठिन होता है। अपने शहर में शराब की लत में फँसे व्यक्ति गुप्त में मिले अथवा अपने पास के पुर्नस्थापन केन्द्र से सम्पर्क करें– कृपया ध्यान दें।

बीमारी की दशा : बीमारी की दशा में मनुष्य का आत्मबल उसको संभालता है पर जब हृदय टूट जाता है तब उसको कौन सह सकता है (नीतिवचन 18:14) पवित्र बाइबिल सिखाती है कि शराबी की लत हमें गरीबी में ढकेल सकती है और हमारे जीवन को बरबाद कर सकती है। क्योंकि शराबी और पेटू आदमी अपनी आदत से गरीब हो जाते हैं। उनकी ऊँघाई उनको फटे–चिथड़े पहना देती है।

बुद्धिमान का मार्ग : उसको जीवन की ऊर्ध्व लोक में ले जाता है और वह अधोलोक में जाने से बच जाता है। (नीति वचन 23:21, 15:24) अपने जीवन में अच्छाई पाने के लिए शराब का सहारा लेने के बदले बाइबिल हम से कहती है कि अपने जीवन को सही दिशा में बढ़ाने के लिए हमें परमेश्वर के पवित्र आत्मा की अगुवाई पाने की खोज में रहना चाहिए।

मदिरा पीकर मतवाले नहीं बने, क्योंकि इससे विषय वासना उत्पन्न होती है बल्कि पवित्र आत्मा से परिपूर्ण हो जाएँ। ''मैं यह कहना चाहता हूँ आप लोग पवित्र आत्मा की प्रेरणा के अनुसार चलेंगे तो शरीर की वासनाओं को तृप्त नहीं करेंगे। शारीरिक स्वभाव तो पवित्र आत्मा के विरुद्ध इच्छा करता है और पवित्र आत्मा शारीरिक स्वभाव के विरुद्ध। ये दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं। इसलिए आप जो चाहते हैं वही नहीं कर पाते हैं।'' (एफेसियों 5:18 गलतियों 5:16–17)

सच्ची स्वतंत्रता : शराब छोड़ने तथा लक्ष्यपूर्ण और सार्थक जीवन जीने के लिए प्रभु येसु मसीह से सहायता माँगने के द्वारा आप शराब से स्वतंत्रता पा सकते हैं। प्रभु येसु ने बाइबिल में हमसे ये वायदे किए हैं। आप इन वायदों को पूरा करने की माँग कर सकते हैं और प्रभु येसु मसीह से माँग सकते हैं कि वह शराब की लत छोड़ने तथा सच्चे आनन्द और शान्ति का जीवन में आपकी सहायता करें।

हमें संपर्क करें :

कृपा फाउण्डेशन

मिलक रोड, करेली पोस्ट
बरेली– 243 004
मो. 9368828428

लिस्यू का संत परिवार

लिस्यू का सन्त तेरेसा – चर्च की सरप्रस्त मानी जाती है। संत पापा पीयुस XI ने सन्त तेरेसा को ''आधुनिक युग की सबसे श्रेष्ठ सन्त'' कहते हैं और संत पापा पीयुस XI यह भी कहते हैं कि सन्त तेरेसा दुनिया भर की प्यारी बेटी है और धार्मिक जीवन का बेहतरीन नमूना है। 1925 में संत पापा पीयुस XI द्वारा तेरेसा को 'सन्त' की पदवी दी गई। उसके कुछ साल बाद 1927 में पवित्र पिता ने उन्हें सन्त फ्रांसिस जेवियर के बराबर का दर्जा दिया और उन्हें मिशनरीज़ का संरक्षक संत घोषित किया गया। तेरेसा 'सन्तनी छोटी पुष्प' के नाम से भी जानी जाती है। ये वो पुष्प है जो मार्टिन परिवार में खिली और ये सब की प्रिय थी।

सन्त तेरेसा के माता–पिता धन्य लूइस मार्टिन और जैले गौरीन एक ख्रिस्तीय पारिवारिक जीवन बिताया। इसलिए उन्होंने अपने बच्चों को भी येसु के अनुयायी बनने और परमेश्वर को अपना जीवन समर्पण करने की शिक्षा दी। सन्त तेरेसा अपने माता–पिता द्वारा दी गई शिक्षा को हमेशा याद रखती थी। सन्त तेरेसा मार्टिन परिवार की सबसे छोटी बेटी थी। सन्त तेरेसा लिखती है ''मेरे माता–पिता ऐसे कीमती पत्थर है जिन्हें खुद पवित्र आत्मा ने चुना और गड़ा है।'' उन्हें कैंडल स्टैंड पर रखा गया जहाँ से वह उन लोगों को रोशनी दे सके जो अपने घरों में हैं। भविष्य में तेरेसा के द्वारा कहे गये इन शब्दों को 'भविष्यवाणी शब्द' माना जाएगा जब इस साल में उनके माता–पिता को सन्त घोषित कर दिया जाएगा। धन्य लूइस मार्टिन और मारिया जैले गौरीन ऐसे पहले माता पिता है जो अपने बच्चे (तेरेसा) के साथ सन्त घोषित किए जाएंगे। 18 अक्टूबर 2015 को उन्हें रोम में सन्त घोषित किया जाएगा। उनके बारे में लिखते हैं, ''लूइस और जैले गौरीन सभी शादीशुदा लोगों और परिवारों के लिए एक उपहार है जो अपने दुःखों और बीमारियों से परेशान है।

लूइस मार्टिन और जैले गौरीन का पारिवारिक जीवन:

मार्टिन लूइस का जन्म 22 अगस्त 1923 को फ्रांस में हुआ। मार्टिन लूइस एक घड़ी बनाने वाले व्यापारी थे और बाद में उन्होंने अपनी खुद की दुकान शुरू की। जैले गौरीन का जन्म 23 दिसम्बर 1831 फ्रांस में अलनजोन नामक एक शहर में हुआ और उनकी शादी लूइस मार्टिन नामक एक युवक से 13 जुलाई 1858 में की गई। इसके उपरान्त उनके घर 9 बच्चों ने जन्म लिया। जिनमें से 4 बच्चों की बचपन में ही मृत्यु हो गई (2 बेटे और दो बेटियाँ)। सन्त तेरेसा उनकी सबसे छोटी बेटी थी और वो सन्तनी छोटी पुष्प के नाम से भी जानी जाती है। बाकी पाँचों बेटियों ने अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित करते हुए कार्मेल कान्वेंट में दाखिला लिया। उनके नाम मरिया, पौलिन, लैयोनी, सैलीन और तेरेसा।

धार्मिकता भरा पारिवारिक जीवन :

लूइस मार्टिन और जैली गौरीन अपने पारिवारिक जीवन में भी धार्मिकता को प्रथम स्थान दिया करते थे। वो अपनी बच्चियों को उच्च शिक्षा और अनुशासन देने का पूरा–पूरा प्रयत्न किया करते थे। माता–पिता की एक ही इच्छा थी कि उनकी बच्चियाँ 'सन्त' बन जाएं। सन्त तेरेसा अपने माता–पिता के बारे में लिखती हैं ''मेरे माता– पिता धरती से ज्यादा स्वर्ग के योग्य हैं।'' सन्त तेरेसा याद करती है कि उनकी माता ने ही उन्हें बचपन में प्रार्थना करना सिखाया था। जब सन्त तेरेसा अपने पिता के साथ कहीं भी घूमने जाती तो राह में आने वाले सभी गिरजाघरों में जा के प्रार्थना किया करती थीं। जब हम सन्त तेरेसा को आधुनिक युग की सबसे श्रेष्ठ सन्त मानते हैं तो इसका पूरा श्रेय मार्टिन परिवार को ही जाता है।

विश्वास से भरा हुआ जीवन :

लूइस और जैले अपनी राजेमर्रा की जिन्दगी ख्रीस्त केन्द्रित होकर व्यतीत करते थे। उनको पवित्र मिस्सा बलिदान और येसु के पवित्र दिल से विशेष भक्ति भावना थी। उनका परिवार माँ मरियम के प्रेम से भरा हुआ था। दिन में दो बार पूरा परिवार एक साथ प्रार्थना और रोजरी माला किया करता था। माता–पिता अपने बच्चों के साथ रोज सुबह 5:30 को पवित्र मिस्सा बलिदान के लिए

जाया करते थे। वो पवित्र यूखरिस्त की आराधना और गिरजाघर के दूसरे कामों में अपना योगदान दिया करते थे। वो अपने जीवन के सभी दु:खों और कठिनाइयों के समय विशेष रूप से माता मरियम से मदद माँगते थे। जैसे अपने जीवन के आखरी दिनों में भी रोजरी माला को अपने आपसे अलग नहीं करती थीं। यह परिवार सभी कामों में नाज़रत के पवित्र परिवार के समान था। इसलिए सन्त तेरेसा कहती हैं ''मुझे यह जानने के लिए सन्त लोग कैसे प्रार्थना करते हैं, तो मुझे अपने पिता को ही देखना पड़ता था।''

सन्त तेरेसा के प्रार्थना जीवन में उनके पिता का गहरा प्रभाव था। पारिवारिक जीवन के अलावा उनका जीवन देख कर उनके दोस्त लोग उन्हें ''सन्त लूइस'' पुकारते थे। जैले गौरीन की मृत्यु के बाद लूइस मार्टिन आपने बच्चों से जब भी जैले के बारे में बोलते तब आपकी ''सन्त माता'' कह कर ही संबोधित करते। उनका आपसी प्यार स्वार्थ रहित और पवित्र था। इसलिए जैले गौरीन लिखती हैं ''मैं कितनी भाग्यशाली हूँ कि मुझे सबसे अच्छा पति मिला इसलिए मैं चाहती हूँ कि दुनिया की सभी औरतों को ऐसा पति मिले। माता–पिता का जीवन बच्चों और दूसरों के लिए बेहतरीन नमूना था। वह अपने बच्चों की धार्मिक बुलाहट को ईश्वरीय वरदान मानते थे और इसके लिए वो हमेशा ईश्वर का धन्यवाद करते थे। पड़ोसियों और गरीबों की मदद के लिए वह हमेशा तैयार रहते थे। यह परोपकारी शैली उन्होंने अपने बच्चों को भी प्रदान की। सब लोग इस परिवार को लूइस का पवित्र परिवार कहते थे।

जैले की मृत्यु 28 अगस्त 1877 में कैंसर के कारण हुई। तब जैले 45 बरस की थी और सन्त तेरेसा मात्र 4 बरस की थी। जैले अपने जीवन के सभी दु:ख और दर्दों को विश्वास के साथ येसु ख्रीस्त के पीड़ा सहन को याद करते हुए अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित कर दिया। लूइस मार्टिन शारीरिक और मानसिक लम्बी बीमारी के बाद 28 जुलाई 1889 में स्वर्गीय राज के लिए बुलाए गए।

जब लुइस मार्टिन और जैले गौरीन 18 अक्टूबर 2015 में सन्त घोषित कर दिए जाएंगे तो यह पूरी दुनिया के लिए एक बड़ा संदेश होगा। उनकी शादी शुदा जिन्दगी से बढ़कर उनका ख्रीस्तीय जीवन सब लोगों के लिए एक श्रेष्ठ नमूना होगा। मार्टिन परिवार नाजरेत के पवित्र परिवार के समान एक गुरुकुल था। यह ख्रीस्तीय जीवन के गुणों को सिखाने और अनुभव करने का परमेश्वर के द्वारा बनाया गया गुरुकुल था। जहाँ वह बहुत ही साधारण तरीके से पूरी मेहनत के साथ और कठिनाइयों का सामना करते हुए अपना जीवन बिताते थे। इन सब खूबियों और विश्वास के कारण ही उन्हें सन्त घोषित कर दिया गया। उनका पूरा जीवन बाइबिल आधारित था। उनके संत घोषित होने से सब ख्रीस्तीय परिवारों में वह चमकते हुए तारे के रूप में सब लोगों के पारिवारिक और धार्मिक जीवन के मार्ग दर्शक बने रहेंगे।

फा. मैथ्यु कुम्पुक्कल, सी.एस.टी, मलोट, पंजाब

मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) -16 के उत्तर

1. संस्कार
2. पुरोहिती जनता
3. येसु ख्रीस्त
4. संत मरियम
5. परम–प्रसाद
6. अभिशिक्त बिशप।
7. क्रिस्मेशन
8. अभिशिक्त पुरोहित
9. माता–पिता
10. याकूब 5:14–15
11. 1 कुरिन्थियों के पत्र 11:23–25
12. पेन्तेकोस्त
13. पवित्र युखरिस्त
14. कलीसियाई अधिकारी
15. सही
16. सिर्फ पुरोहित
17. 4 अक्टूबर 2014
18. खीस्त
19. अति पवित्र त्रित्व
20. संस्कारों

REHEARSAL - OF DEATH AND FUNERAL

Even though I don't sleep very well these days (I mean at a stretch!) the other day I was sound asleep. Not only the sleep was pleasant one but the ambience, the aroma of surrounding nature and a heavenly feeling really felt good. I was just feeling as if I am in the centre stage of all peace and bliss. I just wanted to roll a bit but to my surprise, I could not. My bed is fairly large and I wondered why I can't move. Finally, to my horror I realized..... I am in a coffin. My hands are joined at my chest. There is a rosary and crucifix almost tied to my hands. And them..... I heard the voice of my parish priest.

"Dear brethren, of course we are sad at the untimely demise of our dear brother and friend Greg. He was such a beautiful soul (really!). He was full of talents, most of which he kept in fixed deposits (how true!). He was a great friend of all and sundry (except of himself!). Finally we will miss you dear Greg greatly (I wish I could believe it!) then I heard the knock on the coffin. I was sure they are closing the coffin and nailing the lid. I wanted to shout "I am alive." But no words came from my mouth. Finally the knocks began louder. I suddenly woke up. It was my neighbor Arun knocking at my door and shouting, "Kumbakarn! Get up, it is time to go for Mass." Oh what a relief! I ran to take bath.

Why death is so painful and fearful? Why saying the last 'good-bye' so hurting? Someone said "all of us know we are going to die, but nobody believes it" how true! Because if I believed in my death anytime, I would live life as it is my last show on earth. I would live in such a way, perhaps I would leave a vacuum in the hearts of lives of my friends. I would have forgiven easily. It would have been a great joy to breathe every breath, munch every morsel of food, shake warmly each hand and embrace everyone without the barriers of friends and foes.

The key factor is, if death is inevitable, then the wisdom tells me that I be prepared for it. May be I need to ask often, "Is today the day? Am I ready? Am I doing all I need to do? Am I being the person I want to be?"

The truth is once you learn how to die, you learn how to live. At times I wonder the way we live, relate, love, collaborate, share. Can't we be a little deeper, open, real, true and genuine! It is hard to think about dying because most of us walk around as if we are sleepwalking. We really don't experience the world fully. We do things automatically, think same way- with no newness. In fact facing death changes all that. You strip away all that stuff and you focus on essentials. When you realize you are going to die, you see everything much differently.

The other truth is if we accept that we can die at any time we may not be as anxious and as ambitious as we are. The things we spend so much time on – all this work you do- may not seem as important. Perhaps we may make room for some more spiritual things. With spiritual things, I mean- the loving relationships we have, the universe around us, most of the things we take for granted- will change. Perhaps we will notice the change in the trees, the wind blowing, the birds, the ants, the monkeys and the squirrels. We may also notice the salute of the gatekeeper, the cook or the servant offers us and perhaps we will pause for a while, look at him and smile and say- have a good day.

If birth is so natural so too death. Make peace with the idea of dying. In fact from the moment of our birth we keep dying every

moment onwards- marching to our graves. When you make peace with dying you make peace with living. It is natural to die. We are afraid of it because we do not see ourselves as part of mature. Everything that gets born, dies.

Finally, as long as we can love each other and remember the feeling of love we had, we can die without even really going away. All the love you created is still there. All the memories are still there, you live on – in the hearts of everyone you have touched and nurtured while you were here.

Death ends life, not a relationship.

Gregory Frank, Bareilly

(With inputs from *'Wellsprings'* by Anthony D' Mello and *'Tuesdays with Morrie'* by Mitch Albom)

हम वो अच्छे बच्चे हैं,

हम वो अच्छे बच्चे हैं,
दिल के पूरे सच्चे हैं।
विद्यालय हम जाते हैं,
रोज़ नया कुछ पाते हैं।
लिखते हैं और पढ़ते हैं,
नई सीढ़ियाँ चढ़ते हैं।
अध्यापक हमें पढ़ाते हैं,
खेल नए सिखलाते हैं
जब हम बड़े हो जायेंगे,
करके कुछ दिखलायेंगे।
अभी तो हम सब
उम्र में बस कुछ कच्चे
हम तो अच्छे बच्चे हैं
दिल के पूरे सच्चे हैं।

जीवन पॉल,
विद्यांकुर, धमोला

वह नर नहीं है

वह नर नहीं है
जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभियान है।
वर नर नहीं पशु निरा है और मृतक समान है।
जो निर्धनों की कौड़ियों से
बन रहा धनवान है।
जो निर्बलों को कुचलकर
कहला रहा बलवान है,
जो वंचना कर, ढोंग रच
अपना दिखाता ज्ञान है।
जो दीन दुर्बल आश्रितों पर
झाड़ता निज शान है।
जिसको न निज गौरव और
निज देश का अभियान है,
वह नर नहीं, नर पशु निरा है
और मृतक सम्मान है।
जिसको न अपनी जाति
के उत्थान का अरमान है,
जिसको न अपनी जन्मदाता
शुचि भूमि का अभिमान है।
जिसको न अपनी मातृभाषा
का हृदय से गान है
जिसको न अपनी दीनता
पर खेद–शोक महान है।
जिसको न निज गौरव
तथा निज देश का अभिमान है,
वह नर पशु निरा है और
मृतक सम्मान है।

अनमोल मसीह,
विद्यांकुर, धमोला

मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) -16 के उत्तर भेजने वाले प्रतिभगी

1. Renu Bernard, Jeolikote (20/20)
2. Sr. Divya FDCC, Ranikhet (15/20)
3. Sr. Nidhi SRA, Chorgaliya (14/20)
4. Shatish Alexander, Motinagar (13/20)
5. Sr. Nirupama FSM, Shahjahanpur (12/20)

मध्यस्थ प्रार्थना

वे उनकी ओर से निवेदन करने के लिये सदा जीवित रहते हैं। (इब्रानियों 7:25)

एक बार एक प्रतिष्ठित परिवार के लोग साधना के लिये एक प्रसिद्ध पुरोहित से मिलने आये। माता–पिता उनके तीन पुत्र और बहुएं–कुल मिलाकर आठ लोग थे। उनका पारिवारिक व्यवसाय था और सब लोग मिलकर काम करते थे फिर भी समस्यायें आती रहीं। व्यवसाय नुक्सान में चल रहा था। परिवार के सदस्य एक–दूसरे पर दोष मढ़ने लगे थे। घर में तनाव था। एक–दूसरे के बीच बात–चीत, संवाद बहुत कम हो गया था। माता–पिता दोनों चिंतित थे। पुरोहित ने उनसे एक प्रश्न पूछा : **''क्या आप लोग परिवार में एक साथ और एक–दूसरे के लिये प्रार्थना करते हैं?''** अब तक सब लोग एक दूसरे को दोषी ठहराते थे किन्तु एकाएक कमरे में सन्नाटा छा गया।

जब समस्यायें आती हैं और हम एक दूसरे की आलोचना करते हैं, द्वेष रखते हैं तब केवल बैर और नकारात्मकता ही पनपती है। ऐसी स्थिति में ईश्वर की आशिष प्रवेश नहीं कर सकती। पुरोहित ने उनसे कहा कि उन्हें एक साथ जुड़कर एकता की भावना से प्रार्थना करनी चाहिये। येसु की प्रतिज्ञा है : ''जहाँ दो या तीन मेरे नाम पर इकट्ठे होते हैं, वहाँ मैं उनके बीच उपस्थित हूँ।'' (मत्ती 18:20)

''आप लोग एक साथ प्रार्थना करें, ईश्वर की स्तुति करें, उसके वचनों पर मनन करें, एक दूसरे के लिये निवेदन करें और ईश्वर की शांति और आशिष आपके परिवार में बहेगी'' पुरोहित ने आश्वासन दिया।

प्रार्थना एक–दूसरे के लिये प्रेम की सवोत्तम और निःस्वार्थ अभिव्यक्ति है। येसु ने सिमोन पेत्रुस से कहा, ''सिमोन! सिमोन! शैतान को तुम लोगों को गेहूँ की तरह फटकने की अनुमति मिली है। परन्तु मैंने तुम्हारे लिये प्रार्थना की है, जिससे तुम्हारा विश्वास नष्ट न हो। जब तुम फिर सही रास्ते पर आ जाओगे, तब अपने भाइयों को भी संभालोगे'' (लूकस 22:31–32) येसु जानते थे कि भविष्य में पेत्रुस का विश्वास कितना कमजोर होगा। प्रेम सदा हमें बल देता है परन्तु प्रार्थना हमें रूपांतरित करती है। दूसरों के लिये प्रार्थना करना येसु के पद चिन्हों पर चलना है। हमारी प्रार्थना स्वार्थपूर्ण होकर केवल हमारे प्रिय जनों के लिये मात्र नहीं होनी चाहिये। हमें सारी मानवजाति के लिये, गरीब से गरीबों के लिये और विशेषकर उन लोगों के लिये प्रार्थना करनी चाहिये जिन्हें ईश्वर के विशेष स्पर्श और चंगाई की जरूरत है जैसे : परित्यक्त, वृद्ध, नशेड़ी, बेघर, अकेले, बीमार, कष्ट सहने वाले और मरने वालों के लिये।

''आप लोग प्रार्थना द्वारा हमारी सहायता करें'' (2 कुरि. 1:11)

येसु ने जब प्रार्थना करना सिखाया तो कहा कि हम ईश्वर को, ''हे हमारे पिता'' कहें (मत्ती 6:9) न कि ''हे मेरे पिता।'' येसु हमें समझाना चाहते हैं कि ईश्वर किसी एक अकेले व्यक्ति का नहीं परन्तु सारी मानवजाति का पिता है। वह अनुकम्पा से भरा पिता है जो इस संसार के हर व्यक्ति की जरूरतों की चिंता करता है। जब भी हम अपनी जरूरतों के लिये प्रार्थना करते हैं तब हमें यह अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि ऐसे अनेक लोग हैं जो शायद हमसे अधिक कष्ट सहते हैं, परेशानियों में हैं। जब हम उनके लिये निवेदन करते हैं, हम प्रेम भाव से उन तक पहुँचते हैं, उन्हें और उनकी परिस्थितियों को प्रार्थना के बल से बदल देते हैं।

मध्यस्थ प्रार्थना का प्रभाव और विशिष्टता हम ''विश्वास के पिता'' इब्राहीम के जीवन में देखते हैं (उत्पत्ति 18) सोदोम और गोमोरा के लोग पापमय जीवन बिताते थे और ईश्वर ने चाहा कि वह दोनों शहरों को नष्ट कर दें। इब्राहीम ईश्वर से निवेदन करता है कि क्या वह बुरे लोगों के साथ भले और धर्मी लोगों को भी नष्ट करेगा। क्या पचास भले लोगों के लिये वह इन शहरों को नहीं बख्शेगा? वह ईश्वर से निवेदन करते करते पचास के पैंतालिस, फिर चालीस, तीस और अंत में दस भले लोगों के लिये ये शहर बचाने की विनती करता है। ईश्वर तब भी उसकी प्रार्थना सुनने के लिये तैयार है।

सशक्त और जीवन्त वचन

बाइबिल हमारे चारों ओर है। लोग गिरजाघरों में धर्मग्रंथ के पाठ सुनते हैं। हमें भले समारी की तरह आचरण करने का आग्रह किया जाता है (लूकस 10)। भटके हुए उड़ाऊ पुत्र को वापस घर में लेने के लिये प्रेरित किया जाता है (लूकस 15) और प्रतिज्ञात देश की प्रतीक्षा करने की आशा दी जाती है (निर्गमन 3, इब्रानियों 11)। कुछ बाइबिल पाठ्यांश लोकप्रिय सूक्तियाँ बन चुकी हैं, जैसे ''दूसरों से अपने प्रति जैसा व्यवहार चाहते हो, तुम भी उनके प्रति वैसा ही किया करो'' (मत्ती 7.12)। ''चोरी मत करो'' (निर्गमन 20:15) और ''अपने पड़ोसी को अपने समान प्यार करो'' (मत्ती 22:39)। आज हमें बाइबिल के प्रति समझदार और आध्यात्मिक मानसिकता अपनाने के लिये आमंत्रित किया जाता है।

बाइबिल को पढ़कर उससे आध्यात्मिक लाभ पाने के लिये यहाँ दस सूत्र दिये गये हैं :–

1. काथलिकों को प्रतिदिन बाइबिल पढ़ना चाहिये: कलीसिया हर काथलिक से आग्रह करती है कि वे प्रतिदिन बाइबिल पढ़ें। इन प्रेरणापूण वचनों को पढ़कर हम ईश्वर से गहराई से जुड़ जाते हैं और समुदाय में अपना स्थान और दायित्व समझ सकते हैं क्योंकि स्वयं ईश्वर ने हमें समुदाय का अंग बना दिया है।

2. प्रार्थना सबका आरंभ और अंत : बाइबिल पढ़ना कोई उपन्यास अथवा इतिहास का पुस्तक पढ़ने जैसा नहीं है। पढ़ने से पहले हमारे हृदय व मन ईश्वर के वचन के प्रति खुलने के लिये पवित्र आत्मा से प्रार्थना करें। पाठ पढ़ने के बाद प्रार्थना करें कि जो वचन हमने पढ़ा है वह हमारे जीवन में फल उत्पन्न करें तथा हमें अधिक पवित्र और विश्वासी लोग बनायें।

3. बाइबिल चुनते समय काथलिक संस्करण को चुनें : काथलिक संस्करण में कलीसिया के सम्पूर्ण पवित्र ग्रंथ सम्मिलित हैं। साथ ही हर ग्रंथ के लिये प्रस्तावना और पाठ्यांश समझने के लिये टिप्पणियाँ दी गई हैं। काथलिक संस्करण में कलीसिया के अधिकारियों की मुद्रण–अनुमति छपी होती है। मुद्रण–अनुमति का अर्थ है कि इस ग्रंथ में काथलिक धर्मसिद्धांत के खिलाफ कोई अंश नहीं है।

4. बाइबिल एक पुस्तक नहीं है। यह एक पुस्तकालय है : बाइबिल 73 ग्रंथों का संग्रह है जो कई सदियों के दौरान लिखे गये हैं। इन पुस्तकों में शाही इतिहास, भविष्यवाणी, कविता, संघर्षरत नये विश्वासी समुदायों के लिये चुनौतीपूर्ण पत्र और येसु की शिक्षा और दुःखभोग के साक्षी विश्वासियों के विवरण सम्मिलित हैं। जो ग्रंथ आप पढ़ रहे हैं उसकी शैली जानना आपको इस विषय में सहायता देगा कि लेखक किस प्रकार के साहित्यिक साधनों का प्रयोग कर रहा है और वह क्या संदेश देना चाहता है।

5. जानिये की बाइबिल क्या है और क्या नहीं है: बाइबिल ईश्वर और उन लोगों के बीच के संबंध की कहानी है जिन्हें ईश्वर ने अपनी प्रजा बनने के लिये बुलाया है। इसे एक ऐतिहासिक पाठ के रूप में, विज्ञान का पुस्तक के रूप में अथवा राजनीतिक घोषणा–पत्र के रूप में नहीं पढ़ना चाहिये। बाइबिल में ईश्वर हमें ऐसे सत्य सिखाता है जो हमारी मुक्ति के लिये आवश्यक है।

6. सम्पूर्ण अर्थ आंशिक अर्थ से अधिक महत्वपूर्ण है : बाइबिल को पढ़ते समय उसके संदर्भ को ध्यान में रखें। जिस पाठ को आप पढ़ रहे हैं, उससे पहले और उसके बाद क्या हुआ, उससे पहले के ग्रंथ और बाद के ग्रंथ में क्या हुआ, यह समझना ज़रूरी है।

7. पुराना व्यवस्थान नये व्यवस्थान से संबंधित है : पुराना और नया व्यवस्थान एक दूसरे पर प्रकाश डालते हैं। जब हम येसु की मृत्यु और पुनरुत्थान की पृष्ठभूमि में पुराने व्यवस्थान को पढ़ते हैं तब हम इस घटना को गहराई से समझ सकते हैं। एक साथ, दोनों व्यवस्थान हमें मानवजाति के लिये ईश्वर की योजना को समझने में सहायता करते हैं।

8. पढ़ने में आप अकेले नहीं हैं : पवित्र ग्रंथ को पढ़ने और उस पर मनन चिंतन करने से आप उन सभी विश्वासी स्त्री–पुरुषों के साथ एकात्मकता दिखाते हैं

बेटी का आत्म सम्मान

बेटी को चाँद जैसा न बनाओ, कि हर कोई घूर–घूर कर देखे।
बेटी को सूरज जैसा बनाओ, ताकि घूरने से पहले सबकी नजर झुक जाए।।

आधुनिक समाज में हम सभी जानते हैं कि युगों–युगों से अनेक बेटियों ने अपना परचम लहराया है। जैसे झाँसी की रानी, रजिया सुल्तान, सरोजिनी नायडू, कल्पना चावला, इन्दिरा गाँधी, पी.टी. ऊषा, मैरी कॉम आदि अनेक विरांगनाओं ने अपने कौशल से सभी का मन मोह लिया। आज भी हम उन्हें याद करते हैं।

कुछ कर गुजरना है हमें,
जीवन की हर कठिनाइयों को पार करना है हमें,
स्वप्न जो देखा उसे साकार करना है हमें।
तोड़कर हर बाधाएँ सारी आगे बढ़ना है हमें,
लाँघकर इन चोटियों को पार करना है हमें।
पानी है सफलता हमें छूना है मुकाम को,
दिखाना है दुनिया में सफलता के नये रूप को,
जो कर गुजरना है हमें।।

इतना हौसला इतना जोश होने पर भी आज भी बेटियों को वह दर्जा क्यों नहीं दिया जाता, जो एक पुरुष (बेटे) को समाज देता है। क्यों उसे माता–पिता का प्यार दुलार छोड़कर दूसरे घर की शोभा बनाया जाता है? वहाँ भी उसे वंश को आगे बढ़ाने के लिए बेटे को जन्म देने का मजबूर किया जाता है। बेटे को जन्म न देने पर उसे क्यों सताया जाता है ? क्यों बेटे के बदले बेटियों को कोख में ही मार दिया जाता है ? बेटियों की आवाज को क्यों दबा दिया जाता है ?

बेटी की आवाज को कभी आजमाना नहीं,
वह फूल है उसे कभी रूलाना नहीं।
पिता का तो गुमान होती है बेटी,
जिन्दा होने की पहचान है बेटी।
ऊँगली पकड़कर कल जिसको चलाया था तुमने
फिर उसको ही डोली में बैठाया था तुमने।
बहुत छोटा सा सफर होता है बेटी के साथ,
बहुत कम वक्त के लिए वह होती हमारे पास।
असीम दुलार पाने की हकदार है बेटियाँ,
समझो ईश्वर का आर्शीवाद हैं बेटियाँ।

आप कभी भी अपनी बेटी को बेटा बोल सकते हो, लेकिन आप कभी भी बेटे को बेटी नहीं कह सकते हो। यही कारण है कि ''बेटियाँ आम नहीं खास होती हैं।''

आज भले ही समाज गौर न करे, पर जल्द ही दुनिया यह जान जाएगी जब पूरे देश को बस बेटी ही बचाएगी बस बेटी ही बचाएगी।

''बेटियों को मारो मत सम्मान करो।''

रिबाका गिल,
संत अंथोनी विद्यालय, ज्योलीकोट

प्रभु ! मुझको दे ऐसा बल

प्रभु ! मुझको दे ऐसा बल,
तुम पर हो विश्वास अटल
है कमी यह मुझमें खास,
दृढ़ नहीं तुझ पर विश्वास।
यूं लगा है तुझसे नेह,
पर कभी करता सन्देह।
मसीह ! तू कर कुछ ऐसा,
भरोसा मेरा बने सबल।
दया यही कब से माँगे दीन,
तुझ पर हो पूरा यकीन।
रखती नहीं मैं धैर्य जरा,
दुःख देख जाती घबरा।
इसीलिए तू रखना ख्याल,
क्योंकि मन है मेरा दुर्बल।
कृपा ऐसी करना नाथ,
कभी न छोड़ूँ तेरा हाथ,
न मैं भटकूँ इधर–उधर,
न कभी छोड़ूँ तेरा दर।
तुझसे क्या छुपाये 'राही'।
कि मन उसका कितना चंचल।

स्वाती मसीह, पिपरिया मझरा।

पेड़ लगाएं

पेड़ लगाएं फूल लगाएं,
घर आँगन को सुंदर बनाएं।
पेड़ हवा है ठण्डक लाते,
वातावरण को है स्वच्छ बनाते।
पेड़–पौधों से हरियाली आती,
हर प्राणी के मन को भाती।
पेड़ बढ़ाते जग की शान,
धरती को होता है अभिमान।
पेड़ वायु को शुद्ध बनाते,
प्रदूषण को है दूर भगाते।
पेड़ लगाएं फूल लगाएं,
घर आँगन को सुंदर बनाएं।

सुनीता पीटर, किच्छा

प्यार का एहसास

क्यों आँसू बहते हैं याद करके अपनों को?
जबकि वो अपने हमारे दिल में इतने करीब होते हैं
क्यों हम सोचते हैं कि वो हमारे करीब हैं?
जबकि करीब होने के बावजूद भी वो हमसे बहुत दूर हैं।
क्यों दूरी बढ़ जाती है हमारे अपनों के बीच ?
जबकि प्यार तो गैरों से भी मिलता है।
क्यों हम गैरों पर भरोसा कर अपना जीवन सौंप देते हैं ?
जबकि भरोसा तो एक कांच की तरह होता है जो कि एक बार टूट जाने पर फिर नहीं जुड़ पाता है।
क्यों हम कांच को देख उस टूटे हुए भरोसे को याद करते हैं?
जबकि बीती हुई यादें तो हमेशा दुःख ही पहुंचाती है।
क्यों हम दुःख को छोड़ प्यार को नहीं खोजते ?
क्यों हम ये नहीं सोचते हमारे जीवन में बीती हुई,
हर एक घटना दूसरों के प्रति हमारे प्यार का एहसास है।

प्रिया पीटर, किच्छा

साक्ष्य

मेरा नाम गीता मौर्य है। मैं ग्राम कल्यानपुर खास, पीलीभीत की रहने वाली हूँ। 8 महीने पहले मुझे अंधकार की शक्तियों ने घेर लिया था और छोड़ नहीं रहीं थीं। मैं बहुत परेशान हो गयी थी क्योंकि जब भी मुझे परेशानी होती थी तो मैं पागल जैसी हो जाती और अपनी सुध–बुध खो बैठती तथा बेहोश हो जाती। मैंने अपनी इस बीमारी का अनेकों प्रकार से इलाज करवाया लेकिन कहीं से कोई भी फायदा नहीं हुआ। फिर किसी ने मुझे प्रभु येसु के बारे में बताया तो मैं प्रभु येसु से प्रार्थना करने लगी। कुछ ही दिनों में प्रभु येसु ने मुझे चंगा कर दिया। कुछ समय बाद जब मैं प्रार्थना में कमजोर पड़ गई तो मुझे सांस फूलने की बीमारी हो गयी। फिर मैं अनुग्रह आश्रम में आई. प्रभु येसु से दृढ़ता से प्रार्थना की। डॉक्टर ने कहा था कि ठीक होने में लगभग 6 महीने का समय लगेगा लेकिन प्रभु ने मुझे सिर्फ 15 दिनों में फिर से पूर्ण चंगाई प्रदान की। येसु की स्तुति हो। येसु को धन्यवाद।

समाचार दर्शन

विद्यार्थियों द्वारा गरीब कन्या के विवाह में योगदान

ग्राम सैदपुर में पूर्व में चल रहे सामाजिक अभियान के अन्तर्गत सेंट एलॉयसियस विद्यालय के कक्षा 11 वीं के विद्यार्थी ग्राम सैदपुर गये। सर्वप्रथम वहाँ एक आर्थिक रूप से कमज़ोर एक परिवार से मिले। विद्यार्थियों ने अपनी ओर से उस परिवार की कन्या के विवाह में आर्थिक सहयोग प्रदान किया। बच्चों ने पहली बार जाना कि विवाह के लिये क्या–क्या तैयारियाँ की जाती हैं। साथ ही यह भी जाना कि परिवार को किन–किन कष्टों का सामना करना पड़ता है। विद्यार्थियों ने ग्रामीणों को लड़कियों के विवाह के संबंध में सचेत करते हुए एक नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया। छात्रा हर्षिता मिश्रा, बरखा, वन्दना, फरदीन, गौरव, विशाल की इस प्रस्तुति से ग्रामीण अत्यधिक प्रभावित हुए। छात्र सागर आहूजा, शुभम् ने सबको लड़कियों के विवाह की आयु, शिक्षा तथा सावधानियों के विषय में बताया। मुकर्रब, अनुष्का ने ग्रामीणों स्वच्छता एवं शिक्षा तथा सावधानियों के विषय में बताया। इस कार्य को करते हुए समस्त विद्यार्थी अत्यन्त उत्साहित थे। विद्यार्थियों के इस आत्मविश्वास एवं उत्साह को देखकर हमें पूर्ण विश्वास है कि यह युवावर्ग भारत के भविष्य को सुनहरा बनायेगा। प्रधानाचार्य फा. पॉयस मेनेज़िस ने विद्यार्थियों को भविष्य में भी इसी प्रकार के सामाजिक दायित्व निभाने की प्रेरणा दी। विद्यार्थी, शिक्षक नीरज गुप्ता एवं शालिनी थॉमस ने नेतृत्व में गये। अभियान की संचालिका श्रीमती रंचना सक्सेना एवं अब्दुल वसीम थे।

धर्मबहनों की स्वर्ण-रजत जयन्ती समारोह

"I have called you by name,
You are mine." (Isa. 43:1)

25 अक्टूबर 2015 को संत अल्फोंसस महागिरजाघर में एक भव्य समारोह का आयोजन हुआ। यह समारोह था सन्त फ्राँसिस कॉन्वेंट बरेली की धर्मबहनों की स्वर्ण एवं रजत जयन्ती समारोह का। मदर ट्रैसिला अपने समर्पित जीवन के स्वर्णिम 50 वर्ष मना रहीं थीं। साथ ही साथ सिस्टर आल्फी जोस एवं सिस्टर ऐन क्रिस्टी की रजत जयन्ती समारोह भी था। इन जुबलेरियन्स के साथ, अपने आप को प्रभु मार्ग में ले जाने और प्रभु को अपने जीवन में अपनाने हेतु तत्पर नौविस निरुपमा का प्रथम प्रोफेशन भी साथ में मनाया गया। प्रातः 10 बजे धर्मप्रांत के विभिन्न स्थानों से आए पुरोहितों एवं धर्मबहनों का खूबसूरत रूप से सजी महागिरजाघर में स्वागत किया। इस सुन्दर समारोह का आगाज पवित्र मिस्सा बलिदान के द्वारा हुआ। श्रद्धेय धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा ने और निवर्तमान धर्माध्यक्ष एन्टनी फर्नांडिस ने ख्रीस्तयाग का नेतृत्व किया। गायन मंडली ने अपने मधुर भजनों एवं गीतों से भक्तिमय वातावरण का सृजन किया। अपने मिस्सा बलिदान में मान्यवर धर्माध्यक्ष ने जुबिलेरियन धर्मबहनों को एवं उनके परिवारजनों को और साथ ही साथ उपस्थित सभी पल्ली वासियों को अपने आर्शीवचनों और प्रार्थनाओं से समृद्ध किया।

अपने कान्वेंट एवं सभी सेन्ट फ्रांसिस कान्वेंट की धर्मबहनों की ओर से सि. इलिसा ने आभार व्यक्त किया। मिस्सा के उपरान्त महागिरजाघर के सभा भवन में सभी धर्मबहनों और धर्माध्यक्ष जी के आदर में अभिनंदन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जहाँ मान्यवर धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा ने सभी धर्मबहनों के परिवारवालों को और सभी धर्मबहनों को इस सुन्दर अवसर की बधाईयाँ दीं। उनके प्रभु मार्ग चुनने के लिए एवं निःस्वार्थ सेवा भाव के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में नृत्य के साथ–साथ, सभी जूबलेरियन्स के जीवनी पर प्रकाश डाला।

अंत में स्वर्ण जयन्ती और रजत जयन्ती मना रही धर्मबहनों को सभी पल्लीवासियों और आमंत्रित मित्रों ने बधाईयाँ दीं। सभी उपस्थित जनों ने मिलकर प्रीतिभोज में हिस्सा लिया।

सि. निरुपमा, FCC बरेली

सैन्ट जोसेफ विद्यालय का रजत जयन्ती समारोह

नगर के प्रतिष्ठित सैन्ट जोसेफ विद्यालय को प्रारम्भ हुए पच्चीस वर्ष पूर्ण हो गये। यह विद्यालय सन् 1990 में प्रारम्भ किया गया था। नगर की एक पुरानी राइस मिल के अहाते में लगभग 60 छात्रों से शुरू हुए इस विद्यालय में आज लगभग 2000 छात्र/छात्रायें अध्ययन कर रहे हैं और आज इस विद्यालय की गिनती नगर के ही नहीं अपितु जिले के प्रतिष्ठित विद्यालयों में होती है।

19 अक्टूबर को मुख्य जयन्ती समारोह मनाया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रकाश डी. आई.पी.एस. (आई.जी. एडमिनिस्ट्रेशन) थे, उनके विद्यालय में पधारने के उपरान्त उन्हें गार्ड ऑफ आनर दिया गया। इसके बाद मंच में उन्हें गुलदस्ता एवं रजत जयन्ती स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। अपने सम्बोधन में उन्होंने पढ़ाई के महत्व को और साथ ही पाठ्य सहगामी कार्यकलापों के महत्व को समझाया। साथ ही उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में मिशनरीज के योगदान की सराहना की। सम्मानित अतिथि के रूप में धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा एवं पूर्व धर्माध्यक्ष एन्थोनी फर्नांडिस उपस्थित थे।

इस अवसर पर विद्यालय के सभी पूर्व प्रबन्धकों एवं प्रधानाचार्यों को आमंत्रित किया गया था जिन्हें मंच में धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा द्वारा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किय गया। उपस्थित एवं सम्मानित पूर्व प्रधानाचार्यों एवं प्रबन्धकों में फा. सल्वाडोर डिसूजा, फा. वाल्टर, फा. नोबर्ट, फा. रोबर्ट, सि. मैरियन सी.जे. सि. विनीता सी.जे., सि. मंजूषा सी.जे. आदि उपस्थित थे। विद्यालय में प्रारम्भ से कार्यरत शिक्षिका श्रीमती जॉयस परेरा एवं श्रीमती आशा शर्मा को भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया। विद्यालय के प्रथम बैच के छात्र/छात्राओं को भी इस अवसर पर आमंत्रित किय गया था। उन्हें भी मंच पर आमंत्रित कर स्मृति चिह्न प्रदार कर सम्मानित किया गया।

अपने सम्बोधन में धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा ने कहा कि विद्यालय के विकास और प्रगति में सभी लोगों का योगदान है उन्होंने पूर्व एवं वर्तमान प्रधानाचार्यों, प्रबन्धकों एवं शिक्षकों के अथक प्रयास एवं त्याग की सराहना की। उन्होंने नगर के प्रतिष्ठित व्यवसायी पूर्व विधायक श्री हरीशचन्द्र खण्डेलवाल के सहयोग की भी सराहना की। ज्ञातव्य है कि श्री हरीशचन्द्र खण्डेलवाल ने धर्माध्यक्ष एन्थोनी फर्नांडिस को पूर्व में पूरनपुर में विद्यालय प्रारम्भ करने के लिए आमंत्रित किया था तथा विद्यालय की स्थापना और प्रगति में लगातार सहयोग किया।

इस कार्यक्रम के लिए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संगीत एवं अभिनय अकादमी मुम्बई के निदेशक फा. (डॉ.) चार्ल्स वास को आमंत्रित किया गया था। उनके निर्देशन में विद्यालय के छात्र/छात्राओं ने ''माँ तुझे प्रणाम'' डांस ड्रामा अभिनित किया। इस डांस ड्रामा के माध्यम से मदर टेरेसा के जीवन और उनके योगदान का चित्रण किया गया। मदर टेरेसा द्वारा किये गये कुष्ट रोगियों की देखभाल तथा गरीब और असहाय लोगों को निःस्वार्थ भाव से सेवा करने के दृश्यों को देखकर लोग भाव विभोर हो गये। इस नाटक के माध्यम से यह दर्शाया गया था कि त्याग एवं ममता की मूर्ति मदर टेरेसा ने किस तरह समाज के तिरस्कृत एवं असहाय व्यक्तियों की निःस्वार्थ भाव से सेवा की थी। मदर के त्यागमय जीवन के दृश्यों को देखकर कई लोगों की आँखें भर आयी।

कार्यक्रम के अन्त में ''द कर्टेन काल'' में सभी प्रतिभागियों और सम्बन्धित नाट्य दृश्यों के प्रभारी अध्यापकों को मंच में आमंत्रित किया गया। तदुपरान्त विद्यालय गान गाया गया। विद्यालय के प्रबन्धक फा. मॉरिस ने सभी उपस्थित अतिथियों का कार्यक्रम में आने के लिए शान्तिपूर्वक कार्यक्रम का आनन्द लेने के लिए आभार व्यक्त किया।

– फा. मौरिस डेसा, पूरनपुर

जीसस यूथ सम्मेलन रिपोर्ट 2015

20 अक्टूबर दिन मंगलवार शाम 7:00 बजे स्वागत कार्यक्रम द्वारा इस सम्मेलन की शुरुआत की गयी। इस सम्मेलन में 25 पल्लीयों से 261 YCS तथा ICYM के सदस्यों ने भाग लिया। स्वागत कार्यक्रम में दीप प्रज्जवलन द्वारा सभी फादर, धर्मबहनें तथा युवक–युवतियों का स्वागत किया गया। दीप प्रज्जवलन फा. पॉल फलेरा, फा. रॉयल, फा. ग्रेगरी मस्क्रेनस, फा. उदय, युवा अध्यक्ष मोनिका जोसफ, उपाध्यक्ष गौरव एल्बर्ट तथा युवा निर्देशक फा. फ्रांसिस पिन्टो द्वारा किया गया। इस कार्यक्रम में युवाओं को निर्देशन देने के लिए जीसस यूथ के सदस्य मि. विनोद कुमार, अनशुल, सलमा, बंसती कुजूर, अभिलेश थोमस, तथा समीर थे। 21 अक्टूबर दिन बुधवार को आराधना तथा स्तुति द्वारा दिन की शुरुआत की गयी। इस पूरे दिन में प्रभु के प्यार तथा उनके बलिदान के विषय में युवाओं को निर्देशन दिय गया तथा सभी युवक–युवतियों को अच्छा पाप स्वीकार करने की प्रेरणा दी गयी, इस पाप स्वीकार संस्कार में सभी युवक युवतियों ने अपनी सहभागिता दिखाई। शाम को मिस्सा बलिदान में युवाओं ने भाग लिया इस मिस्सा बलिदान के मुख्य अनुष्ठानदाता फा. डेरिक, फा. फ्रांसिस, फा. उदय, फा. डोमनिक थे। फा. डेरिक ने अपने बहुमूल्य वचनों द्वारा युवाओं का मार्गदर्शन किया। इसके पश्चात् अनेक पल्लीयों के युवक–युवतियों ने बाइबिल में से चमत्कारों पर आधारित लघु नाटिकाएँ प्रस्तुत कीं। इसमें प्रथम पुरुस्कार रूद्रपुर पल्ली, द्वितीय पुरुस्कार सितारगंज पल्ली तथा तृतीय पुरुस्कार बाजपुर पल्ली को दिया गया। 22 अक्टूबर दिन बृहस्पतिवार की शुरुआत आराधना तथा स्तुति द्वारा की गयी, इस पूरे दिन में जीवन की सुन्दरता तथा पवित्र आत्मा के प्यार के बारे में बताया गया तथा शाम की आराधना में युवाओं ने बहुत योग्य रीति से भाग लिया और प्रभु का अनुभव किया इसका निर्देशन जीसस यूथ के सदस्यों द्वारा किया गया।

23 अक्टूबर दिन शुक्रवार को स्तुति तथा आराधना द्वारा शुरुआत की गयी। इस दिन जीसस यूथ तथा सामूहिक प्रार्थना के बारे में बताया गया। युवा होने के नाते हमारे कर्त्तव्यों के बारे में बताया गया इसके पश्चात् मिस्सा बलिदान द्वारा इस सम्मेलन का समापन किया गया। इस मिस्सा बलिदान द्वारा इस सम्मेलन का समापन किया गया। इस मिस्सा बलिदान द्वारा युवाओं को निर्देशन दिया गया और इस मिस्सा के मुख्य अनुष्ठानदाता धर्माध्यक्ष इग्नेशियस डिसूजा और फा. फ्रांसिस पिंटो, फा. साबू, फा. उदय, फा. अरुण थे, स्वामी जी ने युवाओं को संसार का नमक तथा ज्योति किस प्रकार बनना हैं, उसके बारे में बताया इसके बाद निबन्ध तथा कविता प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया तथा बाइबिल प्रस्तुत किए गए काय गए कार्यक्रमों की विजेता पल्लीयों को पुरुस्कृत किया गया।

अनुग्रह आश्रम में आन्तरिक चंगाई की साधना

सितम्बर 24 से 27 तक अनुग्रह आश्रम में आन्तरिक चंगाई की साधना का आयोजन किया गया। साधना की शुरूआत बाइबिल जुलूस से की गई तत्पश्चात फा. सुनील ने ईश्वर के प्रेम के बारे में बताते हुए प्रभु का वचन बांटा। इस साधना में मुख्यतः मनुष्य के आन्तरिक घावों के बारे में मनन किया गया तथा चंगाई के लिए प्रभु येसु से प्रार्थना की गई। इस साधना में अलग–अलग जगह से आये लगभग 150 लोगों ने भाग लिया। साधना का समापन रविवार के सत्संग के साथ किया गया।

बाजपुर डीनरी बाइबिल महोत्सव

24 अक्टूबर 2015 शनिवार को बरेली धर्मप्रान्त के बाजपुर डीनरी में बाइबिल महोत्सव बड़े हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें, बाजपुर डीनरी के अन्तर्गत आने वाली सात पल्लियों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया। महोत्सव का प्रारम्भ सेन्ट मैरी स्कूल के प्रांगण से प्रारम्भ बाइबिल जुलूस के साथ हुआ तत्पश्चात सभी विश्वासी विद्यालय के हाल में एकत्रित हए वहाँ पवित्र बाइबिल को आशिष प्राप्त कर पवित्र बाइबिल को पवित्र स्थान पर स्थापित किया गया। धर्माध यक्ष स्वामी जी ने महोत्सव का शुभारम्भ दीप प्रज्जवलित करके किया। अपने सम्बोधन में स्वामी जी ने पवित्र बाइबिल का हमारे जीवन में, हमारे परिवारों में महत्व को बताया तथा कहा ईश्वर का वचन दो धारी तलवार के समान है जो हमारे जीवन में काम करता है। तत्पश्चात् फा. विवियन ने अपने सम्बोधन में कहा कि जिस प्रकार हम अपने मोबाइल को हमेशा अपने साथ रखते हैं और हर समय उस पर अपनी मिस कॉल अपना वाह्टअप, अपनी फेसबुक चैक करते रहते हैं और उसकी बेटरी को हमेशा चार्ज करते रहते हैं। उसी प्रकार हमें हमारी बाइबिल को अपने साथ रखना चाहिए, समय–समय पर उसे मैसेज चैक करना चाहिए और प्रभु हमसे क्या कहते हैं यह देखते रहना चाहिए। साथ ही हमेशा बाइबिल के माध यम से अपने जीवन को चार्ज करते रहना हेगा। दोपहर 11.00 बजे पवित्र मिस्सा बलिदान श्रद्धैय स्वामी जी द्वारा चढ़ाया गया, भोजन के उपरान्त बाइबिल नृत्य, बाइबिल क्विज, एवम् बाइबिल नाटक की प्रतियोगितायें हुईं जिसमें सभी पल्लियों ने बड़े ही उत्साह के साथ भाग लिया जिसमें बाइबिल नृत्य में प्रथम पुरस्कार बाजपुर पल्ली, द्वितीय पुरस्कार जसपुर पल्ली और तृतीय पुरस्कार काशीपुर पल्ली ने प्राप्त किया तथा बाइबिल क्विज प्रतियोगता में प्रथम पुरस्कार बाजपुर पल्ली, द्वितीय पुरस्कार काशीपुर पल्ली तथा तृतीय पुरस्कार धमोला पल्ली ने प्राप्त किया तथा बाइबिल नाटक में प्रथम पुरस्कार धमोला पल्ली, द्वितीय पुरस्कार काशीपुर पल्ली, तृतीय पुरस्कार बाजपुर पल्ली ने प्राप्त किया। महोत्सव के अन्त में बाजपुर डीनरी के डीन फा. हैरी डिकून्हा ने सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किये, महोत्सव का संचालन फा. विवियन ने किया तथा निर्देशन फा. हैरी ने किया इस अवसर पर फा. संजीव, फा. शेखर, सि. रेखा, सि. स्यारलेट आदि अनेक धर्म बहने एवम् लोकधर्मी उपस्थित थे।

विजय पॉल, काशीपुर

युवा मिलन

जीसस यूथ साधना का सफल आयोजन के बाद युवा कमीशन एक और कार्यक्रम लेकर आपके सामने है। यह युवा मिलन कहलाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं को येसु और कलीसिया के निकट लाना है तथा उन्हें कलीसिया के सक्रीय सहभागी बनाना है। यह कार्यक्रम सुबह 9 बजे से शाम 4 बजे तक चलेगा। कार्यक्रम के मुख्य पाँच बिन्दु हैं।

1. संगीत के साथ स्तुति आराधना।
2. मेल-मिलाप संस्कार के लिए प्रेरणादायी भाषण।
3. पवित्र यूखस्ति और उसका महत्व।
4. आराधना और चंगाई प्रार्थना।
5. गतिविधियाँ- अ. बाइबिल क्विज़
   ब. एक्शन साँग
   स. खेलकूद
   द. प्रचलित समस्याओं पर चर्चा
   ङ. मूल्यांकन और भविष्य का कार्यक्रम

इच्छुक युवा अपने पल्ली पुरोहित द्वारा युवा कमीशन से सम्पर्क करें।

फा. फ्रांसिस पिन्टो

बाइबिल प्रश्नोत्तरी -16

(पहला इतिहास – ग्रन्थ अध्याय 15 से 29 तक)

प्रिय पाठकों, पुरोहितों के अलावा सभी इस क्विज में भाग ले सकते हैं। उत्तर पुस्तिका पर कृपया अपना नाम, पिता का नाम, पल्ली या संस्था का नाम और मोबाइल संख्या अवश्य लिखें। बाइबिल प्रश्नोत्तरी के लिए कामिल बुल्के की हिन्दी बाइबिल का ही संदर्भ लें। प्रथम Rs. 500, द्वितीय Rs. 300 तथा तृतीय Rs. 200 के नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया जायेगा। यदि किसी पुरस्कार के लिए एक से अधिक विजेता पाए जाते हैं तो उनका निर्णय लॉट द्वारा किया जायेगा। आपके उत्तर हमें नवम्बर 25, 2015 से पहले अवश्य मिल जाने चाहिए। कृपया केवल अपने उत्तर निम्न पते पर भेजें – **Rev. Fr. Arun Saldanah,** Bishop's House 63, Cantt. Bareilly 243 001 (U.P). E-mail: chetnabareilly1989@gmail.com

1. मंजूषा को लाकर कहाँ रखा? Into what structure was the ark set?
2. ———— ने फ़िलिस्तियों के हाथों से गत और उसके पास के गाँव छीन लिये। .....took Gath and its villages from the Philistines.
3. दाऊद ने प्रभु की मंजूषा की सेवा के लिए ———— को नियुक्त किया। David appointed ..... as ministers before the ark of the Lord.
4. कौन एक तम्बू से दूसरे तम्बू, एक निवास से दूसरे निवास जाता रहा? Who lived in a tent and a tabernacle?
5. किसने अपने पुत्र हदोराम को राजा दाऊद के पास भेजा? Who sent his son Hadoram to King David?
6. दाऊद द्वारा इस्राएलियों की जनगणना से कितने लोग मारे गये? How many died as a result of David's sin in numbering Israel?
7. कौन अपनी सारी प्रजा के साथ निष्पक्ष और उचित व्यवहार करता था? Who administered justice and equality to all his people?
8. दाऊद का सचिव————। .....was king David's Secretary.
9. प्रभु ने ———— को सारे इस्राएलियों की दृष्टि में महान् बनाया। The Lord highly exalted .....in the sight of all Israel.
10. किसके मुकुट को दाऊद के सिर पर पहनाया? Whose crown was placed on David's head?
11. दाऊद ने किसको प्रभु का मन्दिर बनवाने का आदेश दिय? Whom did David Charge to build a house for the Lord?
12. प्रभु इस्राएल के ईश्वर ने अपनी प्रजा को ———— प्रदान की है और वह सदा ———— में निवास करता है। The Lord, the God of Israel, has given ....to his people; and he resides in .....forever.
13. नादाब, अबीहू, एलआज़ार और ईतामार————के पुत्र हैं। Nadab, Abihu, Eleazar and Ithamar are the sons of.....
14. इब्राहीम के लिए निर्धारित ————। .....made with Abraham.
15. ————, हेमान और यदूतून के वंशजों सितार, सारंगी और मंजीरा बजाते हुए भविष्यवाणी करने दाऊद ने चुना। Sons of....., of Heman and of Jeduthun David set apart for the service to prophesy with lyres, harps and cymbals.
16. मेरे ———— पर हाथ नहीं लगाना, मेरे ———— को कष्ट नहीं देना। Do not touch my.....; do my ..... no harm.
17. ————दाऊद का चाचा और मन्त्री था। .....was David's uncle and Counselor.
18. दाऊद को कौन विजय दिलाता था? Who was giving victory to King David?
19. ''मैं उसका पिता होऊँगा और वह मेरा पुत्र होगा'' किसने किस के बारे में कहा? I will be a father to him, and he shall be my don to me" who said about whom?
20. दाऊद ने हानून को क्यों दया दिखाया? Why did David want to show kindness to Hanun?

मेरा विश्वास (धर्मशिक्षा प्रश्नोत्तरी) - 17

प्रिय पाठकों, पुरोहितों के अलावा सभी इस क्विज में भाग ले सकते हैं। उत्तर पुस्तिका पर कृपया अपना नाम, पिता का नाम, पल्ली या संस्था का नाम और मोबाइल संख्या अवश्य लिखें। प्रथम Rs. 500, द्वितीय Rs. 300 तथा तृतीय Rs. 200 के नकद पुरस्कार से पुरस्कृत किया जायेगा। यदि किसी पुरस्कार के लिए एक से अधिक विजेता पाए जाते हैं तो उनका निर्णय लॉट द्वारा किया जायेगा। आपके उत्तर हमें नवम्बर 25, 2015 से पहले अवश्य मिल जाने चाहिए। कृपया केवल अपने उत्तर निम्न पते पर भजें – **Rev. Fr. Arun Saldanha,** Bishop's House 63, Cantt. Bareilly - 243 001 (U.P). E-mail: chetnabareilly1989@gmail.com

1. पूजन–पद्धति का समारोह ———— और ————से मिश्रित है जिनका अर्थ सृष्टि और मानव संस्कृति में निहित है।
2. ———— के माध्यम से खीस्त हमारी मुक्ति का कार्य अपनी कलीसिया के द्वारा संपन्न करते हैं।
3. पूजन–पद्धति में सम्पूर्ण ————कार्य करते हैं।
4. प्रवर्तन के संस्कार————, ———— और ———— है।
5. स्नान संस्कार पाने वाले व्यक्ति के कपाल पर पानी डालते हुए दिया जाता है उसे ———— कहते हैं।
6. ———— के दिन येसु ने परम प्रसाद की स्थापना की।
7. ———— संस्कार के द्वारा ईश्वरीय जीवन और ईश्वर की जनता की एकता दोनों प्रकट और प्रतिफलित होते हैं।
8. दृढ़ीकरण संस्कार केवल एक बार लिया जा सकता है। सही/गलत
9. रोटी और दाखरस के रूप में येसु खीस्त का शरीर और रक्त को ———— कहते हैं।
10. ———— संस्कार "भावी महिमा की प्रतिज्ञा" है।
11. प्रवर्तन के संस्कार बपतिस्मा, परमप्रसाद और मेल–मिलाप है। – सही या गलत।
12. पर्वों का पर्व कौन सा पर्व है?
13. कलीसिया के संस्कार को कितने भागो में विभाजित किया है?
14. बपतिस्मा का अनुष्ठाता कौन है?
15. बपतिस्मा देने का अर्थ है
16. पवित्र संस्कार कितने हैं?
17. चंगाई संस्कार कौन सा है?
18. ———— विधान में रोग को दुर्बलता का चिन्ह समझ जाता था।
19. दृढ़ीकरण का प्रभाव ———— के जैसे पवित्र आत्मा का विशेष उद्गार है।
20. ———— संस्कार में आदिपाप, सभी व्यक्तिगत पापो और पाप की सजा को मिटा देता है ।